—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूकी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही !

मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231

e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा, काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

अप्रैल, 2007 वर्ष 6 अंक 02

अल्लाह तआला का एअ्लान

जिस ने मेरे किसी वली से अ़दावत रखी मैं ने उस से लड़ाई का एअ्लान कर दिया।

(ह़दीसे कुदसी-मिश्कात)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फ़ोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐ मुसलमान आपस में भाई हैं	सम्पादकीय	3
❐ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
❐ शाफिअे मदीना	मौ० मु० सानी हसनी	8
❐ मुसलमानों के दस अतीये	मौ० स० अबुल हसन अली हसनी	9
❐ हमारी बादशाही	मौ० अब्दुस्सलाम किदवई	10
❐ नअ़ते रसूले पाक	इकबाल आजमी	12
❐ दीनी मदरसों का दौर	मौ० अब्दुल करीम पारीख	13
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	15
❐ इस्लाम दया का धर्म	दलाई लामा	16
❐ पानी तथा हमारा शरीर	जमाल नुसरत	17
❐ पर्दा सभ्य समाज का आवश्यक अंग	मु० हसन सुल्तान कुरैशी	18
❐ पैरों में सूजन	डॉ० के.के. पाण्डेय	19
❐ कितने हितकारी मदरसे	जमील अहमद खां	21
❐ सय्यिदुना अब्दुल कादिर जीलानी	अब्दुर्रशीद राजस्थानी	23
❐ ऐ साहिबे अर्शेबरीं (पद्य)	अमतुल अजीज	26
❐ वै जो भुला दिये गये	डा० महीप सिंह	27
❐ दो नजमें	हरि नारायण शर्मा	28
❐ पर्दा औरतों के लिए अपमान या सम्मान	वसीम अहमद	29
❐ मानवता का सन्देश	इदारा	30
❐ सैलानी की डायरी	एम हसन अन्सारी	31
❐ बड़ी शान वाला हमारा खुदा है		31
❐ हिन्दोस्तानी मुसलमानों का पैगाम	मौ० राबे हसनी	32
❐ एक अहम फत्वा	इदारा	34
❐ अहम मालूमात	(कान्ति के शुक्रिये के साथ)	35
❐ शिर्क किसे कहते हैं ?	मौ. खुर्रम अली	36
❐ अल्लाह की याद	अब्दुर्रशीद खैरानी	37
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

सारे मुसलमान आपस में भाई हैं और सारी मख़्लूक अल्लाह का कुंबा है।

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

"मुसलमान तो आपस में भाई हैं पस आपस में मेल करा दिया करो" यह बात तो क़ुर्आने मजीद में बताई गई है देखें सूरे नम्बर ४६ आयत नम्बर १० और ह़दीस में आया है कि "सारी मख़्लूक (सृष्टि) अल्लाह का कुंबा (कुटुम्ब) है। इसलिये इसको आपस में लड़ते झगड़ते देखकर बड़ा दुख होता है। अस्ल में यह दुन्या है ही ऐसी कि इन्सान इसके पीछे पागल हो जाता है। फ़ारसी वाले कहते है, ज़र, ज़न, ज़मीन अर्थात धन, नारी, भूमि (सम्पत्ति) झगड़े की जड़ हैं। अगर आप ध्यान दें तो तमाम दुन्यावी झगड़ों का कारण यही तीनों वस्तुऐं हैं। जब इन्सान इन तीनों या इन तीनों में से किसी एक के लोभ में पड़ कर अपने ह़क़ (स्वत्व) से ज़ियादा लेना चाहता है या बिना ह़क़ के लेना चाहता है तभी झगड़ा पैदा होता है।

इन दुन्यावी झगड़ों को मिटाने के लिए सोच विचार कर कुछ दानिशमन्दों (बुद्धिमानों) ने फ़ैसला किया (निर्णय लिया) कि लालच को ख़त्म किया जाए, कुछ ने कहा कि ख़्वाहिश (इच्छा) ही को ख़त्म कर दिया जाए, तो दुन्या के झगड़े ख़त्म हो सकते हैं। लेकिन यह दोनों बातें फ़ितरत (प्रकृति) के ख़िलाफ़ थीं इसलिये कुछ लोग इन्फ़िरादी (वैयक्तिक) ह़ैसीयत से काम्याब दिखे मगर कोई मुआ़शरा (समाज) इस तौर पर वजूद में न आ सका।

पैदा करने वाले ने इसका इन्तिज़ाम (प्रबन्ध) ख़ुद किया और अपने दूत (पैग़म्बर) भेज कर इस दुन्या में भी सूकून ह़ासिल करने का तरीक़ा (विधि) बताया और इस ज़िन्दगी (जीवन) के ख़ातिमे (समाप्ति) पर कभी न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी में सुकून पा लेनी का तरीक़ा भी बता दिया। लेकिन साथ ही यह भी बता दिया कि इस दुन्या से फ़साद (उपद्रव) एक दम ख़त्म हो जाए, ऐसा मुम्किन (सम्भव) नहीं इसलिये कि इस ख़िल्क़त (सृष्टि) के पैदा करने वाले ने किसी मस्लह़त (औचित्य अर्थात छुपे लाभ) से इन्सान के साथ उसके मुख़ालिफ़ (विरोधी) शैतान (दानव) को भी पैदा किया है और किसी मस्लह़त से उसको छूट भी दे रखी है देखें पवित्र क़ुर्आन सूरे नम्बर १७ आयत नम्बर ६३ से ६५ तक

अनुवाद : पैदा करने वाले ने कहाः जा इन (इन्सानों और जिन्नात) में से जो तेरे साथ होगा तुम सब की सज़ा जहन्नम है, पूरी सज़ा। और इन में से जिस जिस पर तेरा क़ाबू चले अपनी चीख़ पुकार से उसका क़दम उखाड़ देना और उन पर अपने सवार और पियादे (पैदल चलने वाले) चढ़ा लाना और उनके माल और औलाद में अपना साझा कर लेना और इनसे (लालच देने वाले झूठे) वअ़्दे करना, और शैतान इन लोगों से झूठे वअ़दे करता है। (ऐ शैतान) मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा क़ाबू न चल सकेगा और (ऐ मेरे प्यारे मुह़म्मद) आप का रब काफ़ी कारसाज़ (परियाप्त काम बनाने वाला) है।

पस दुन्यावी फ़ित्ना व फ़साद (उपद्रव) और उख़रवी (पारलौकिक) सज़ाओं (दन्डों) से बचने और दाएमी जिन्दगी (स्थायी जीवन) में अल्लाह की रजा और उसके इनआमात (पुरस्कार) पाने के लिये ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) के उन बन्दों जैसा बनना ज़रूरी है जिनको ख़ालिक़ ने "इबादी" (मेरे

ख़ास बन्दे) कहा है। और यह जभी मुम्किन है जब हम अपने ख़ालिक़ को पहचानें उससे महब्बत करें, उसके हुक्मों (आदेशों) के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें। इस बारे में हमारी अक़्ल इतना तो समझ रही है कि जब एक सुई किसी के बनाए बिना नहीं बन सकती तो यह ज़मीन, आसमान, सूरज, चान्द, तारे फिर उनका मुंज़बित निज़ाम (व्यवस्थित प्रबन्ध) ख़ुद ब ख़ुद (स्वतः) कैसे मुम्किन है। लाज़िमन (अवश्य ही) इनका कोई ख़ालिक़ और नाज़िम (निर्माता तथा संचालक) है उसी को कोई अल्लाह कोई ख़ुदा, कोई ईश्वर तो कोई गाड कहता है। लेकिन इस के आगे उसे ख़ुदा की पहचान, उसकी सिफ़ात (गुणों) की जानकारी यह अक़्ल नहीं पा सकती न ही यह अक़्ल उस के अहकाम (आदेश) अज़ ख़ुद जान लेने की ताक़त व सलाहीयत (क्षमता) रखती है।

चुनांचि अल्लाह तआला ने अपने रहम व करम से इन्सानों और जिन्नात को अपनी पहचान बताने और अपने अहकाम (आदेश) पहुंचाने के लिए अपने ख़ास पैग़म्बर (दूत अथवा सन्देष्टा भेजना शुरूअ किया जिनको अरबी में नबी और रसूल कहते हैं। लेकिन शैतान अपनी पाई हुई छुट से लाभ उठाते हुए इन्सानों और जिन्नों को बहकाता रहा अगर्चि अल्लाह तआला ने शैतान को मुख़ातब करके साफ़ कह दिया थाः अनुवादः जो शख़्स इन में से तेरा कहना माने गा मैं ज़रूर तुम सबसे (अर्थात तुझ से और तेरे साथियों से और जिन्नों और इन्सानों में से तेरी मानने वालों से) जहन्नम को भर दूंगा (पवित्र क़ुर्आन– ७:१८) पस बहुत से लोग शैतान के बहकावे में आकर उसके पीछे चले और जहन्नमी हो गये और जिन लोगों ने पैग़म्बरों (अलैहिस्सलाम) का कहना मान लिया, अपने रब को पहचान लिया और उसके अहकाम (आदेशों) को अपनी ज़िन्दगी में जारी कर दिया वह अल्लाह के इनआमात के मुस्तहक़ (अधिकारी) हुए। यह शैतानी कोशिशों का सिल्सिला क़ियामत तक चलेगा इसलिये कि शैतान को क़ियामत तक की छूट मिली हुई हैः

फ़रमायाः तुझको छूट दी गयी वक्ते मअ्लूम अर्थात क़ियामत तक। पवित्र क़ुर्आन १५:३७, ३८)

यह इन्सान व जिन्न और शैतान का मुक़ाबला क़ियामत तक चलता रहेगा। जन्नत भी भरी जाएगी और दोज़ख़ भी। अल्लाह तआला ने पैग़म्बरी का सिल्सिला अपने आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ख़त्म फ़रमा दिया अब कोई नबी न आएगा और ख़ुदाई अहकाम जो हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर पूरे हो चुके हैं और क़ियामत तक के लिए काफ़ी (परियाप्त) हैं उनको इन्सानों तक पहुंचाने का काम अंबिया के वारिसीन उलमा के ज़िम्मे हो गया। लेकिन शैतान का काम भी जारी है उसने उम्मत के उलमा को लड़ाने की कोशिश की लेकिन वह तो अल्लाह के ख़ास बन्दे थे उनको लड़ा न सका वह हनफ़ी, मालिकी, शाफई, हंबली और असरी, सलफ़ी अथवा अहले हदीस होकर भी एक रहे। सबने एक दूसरे को स्वीकृति दी और तै हो गया कि यह तो क़ुर्आन व हदीस के फ़हम (बौद्ध) का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है। मगर शैतान तो इन्सान का दुश्मन है फिर उसको क़ियामत तक छूट मिली हुई है। वह उम्मत में वक़्त वक़्त से मुसैलिमा, कज़्ज़ाब, अस्वद अनसी और मिर्ज़ा क़ादियानी जैसों को भेजता रहा अगर दौरे अव्वल में मुसैलिमा कज़्ज़ाब जैसों को मारे जाने का नमूना मौजूद न होता तो मिर्ज़ा ग़ुलाम जैसों को समझने में बड़ी दुश्वारी होती, ख़ारिजी, राफ़िज़ी, जब्री क़द्री जैसे फ़िर्क़ो को तो पहले ही "मा अना अलैहि व अस्हाबी" (जिस रास्ते पर मैं हूं और मेरे सहाबा) की रौशनी में उम्मत ने पहचान लिया था। लेकिन शैतान हिम्मत न हारा "मा अना अलैहि व अस्हाबी" वाली जमाअत यअनी अहले सुन्नत वल जमाअत में भी फूट डालने में

(शेष पृष्ठ ८ पर)

कुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

आखिरत में क्या–क्या होने वाला है?

कुरआने पाक अपने असल मकसद व मजमून के लिहाज से च्योंकि "इन्जार व तबशीर तर्गीब और हिदायत व नसीहत" का सहीफा है, फलसफा या इलमे–कलाम की किताब नहीं है, इसलिए आखिरत के मुतअल्लिक दलीलों वाली चर्चा से जियादा इसमें आखिरत में पेश आने वाली उन बातों का जिक्र किया गया है जिन के तजकिरे से एक सही फितरत वाले आदमी के दिल में आखिरत की फिक्र और खुदा का खौफ पैदा हो सकता है। बल्कि कहा जा सकता है कि कुरआने मजीद का बहुत बड़ा हिस्सा इसी मजमून से संबंधित है।

आखिरत की मंजिलें।

मौत अस्ल में इस दुन्या से आखिरत की तरफ इन्तिकाल ही का नाम है। और इस तरह मानो आखिरत का सफर मौत ही से शुरू हो जाता है। लेकिन मरने के दिन से लेकर कियामत तक का जो जमाना है, जिसको बर्जख कहा जाता है उसकी निसबत, आलमें आखिरत के लिहाज से क़रीब क़रीब वही है जो निस्बत जमान–ए–हम्ल (गर्भकाल) को इस दुनिया की जिन्दगी से है। मतलब यह है कि आखिरत की अस्ल ज़िन्दगी तो कियामत से शुरू होगी और जज़ा सज़ा का अस्ल ज़हूर क़ियामत के बाद ही होगा, लेकिन मौत से लेकर क़ियामत तक का दौर उसकी उसी तरह की तमहीद (भूमिका) वाली और बर्जखी मन्जिल है, जैसे कि इस दुन्या में आने के लिए हर आदमी को कुछ मुद्दत तक मां के पेट में ठहरना पड़ता है। इसी वास्ते कुरआन मजीद में मौत के वक्त से क़ियामत तक के इस वर्जखी दौर का जिक्र बहुत कम और मुख्तसर किया गया है। अलबत्ता कियामत, हश्र नश्र हिसाब–किताब और जन्नत व दोजख के सवाब–व–अजाब का जिक्र सैकड़ों जगह और ऐसे तफसीली ढंग से किया गया है जो इन्सानों के दिलों में आखिरत की फिक्र और खुदा का खौफ पैदा करने के लिए काफी बल्कि काफी से भी बहुत जियादा है और बेशक इस खुसूसियत में वह अपनी मिसाल आप है। चंद आयतें इस सिलसिले की यहां भी पढ़ लीजियेः–

सूरए मुअमिनून में एक जगह आलमे आखिरत (आखिरत वाली दुन्या) की उन सारी मंजिलों का जिक्र किसी हद तक मुखतसर, इस तरह फमार्या गया हैः–

तर्जमा– यहां तक कि जब आती है उन मुजरिमों में से किसी को मौत तो उस वक्त वह कहता है कि ऐ पर्वर्दिगार मुझे फिर दुन्या में लौटा दे ताकि जो कुछ मैं छोड़ आया हूं उस में नेक अमल करूं और जिन्दगी में जो कोताहियां की हैं, जाकर उनकी भरपाई करूं। अल्लाह तआला फर्माता है कि हरगिज नहीं, यह केवल एक कहने की बात है जो यह कह रहा है (मौत के बाद बिलकुल ही किसी को वापसी की इजाजत नहीं) और उनके पीछे एक आड़ है क़ियामत के दिन तक (यानी मौत के बाद बावजूद तमन्ना और इलतिजा के वे दुन्या में वापस नहीं भेजे जायेंगे बल्कि क़ियामत के दिन तक एक बंधन में (और मानो एक प्रकार की कैद) में रहेंगें। फिर जब सूर फूंका जायेगा और क़ियामत काइम होगी तो उस दिन उनके सारे आपस के रिश्तेनाते टूट जायेंगे, और उनमें से कोई किसी के हाल को पूछने वाला न होगा। (और उस दिन हर एक का फैसला उसके आमाल पर होगा) पस जिन लोगों के नेक आमाल का पलड़ा भारी होगा वही उस दिन कामयाब और बामुराद होंगे और जिनका पलड़ा हलका होगा तो वही वे होंगे जिन्होंने अपने आप को तबाह कर डाला, वे जहन्नम ही में पड़े रहेंगे, आग झुलसती होगी उनके चेहरों को और उसमें उनके मुंह बिगड़े हुए होंगे। (अल मोमिनून ६६–१०२)

और सूरए–कॉफ में मौत और फिर क़ियामत का जिक्र एक जगह इस तरह फर्माया गया हैः–

तर्जमाः– (हर शख्स होशियार हो जाये) मौत की सकरात का वक्त अल्लाह के ठीक फैसले के मुताबिक करीब आ चुका है। यह मौत वह चीज

है जिससे ऐ इन्सान तू बिदकता और भागता था। और यह न समझो कि मौत पर किस्सा खत्म है, बल्कि क़ियामत जिसकी खबर तुम को सुनायी जा रही है, वह बेशक अपने वक्त पर आयेगी और सब लोगों को दुबार जिन्दा करने के लिए) सूर फूंका जायेगा वही लौटने का दिन होगा। उस दिन हर आदमी आखिरत की अदालत–गाह (इन्साफ की जगह) की तरफ इस तरह आयेगा कि उसके साथ एक फरिश्ता उसको साथ लाने वाला होगा, और एक सरकारी गवाह की हैसियत से होगा। (उनमें जो मुनकिर और आखिरत को भूलने वाले होंगें, उनसे कहा जायेगा) तू अदालत और इन्साफ के इस दिन से बेखबर और गाफिल था, हमने तेरी आंखों से अब पर्दा हटा दिया, पस अब तेरी निगाह खूब तेज है। (और जिन हकीकतों का तू मुनकिर था, अब वे तेरी आंखों के सामने हैं)

और सूरए नम्ल में कियामत और उसकी भयंकरता को इस तरह बयान किया गया है:–

तर्जमाः– और जिस दिन कि दुन्या के इस निजाम को दरहम बरहम और खत्म करने के लिए अल्लाह के हुक्म से सूर फूंक दिया जायेगा तो जमीन व आसमान की सारी मखलूक (आदमी और फरिश्ते बगैरा उसकी हैबत ओर दहशत से) बहुत घबरा जायेंगे (और बेहोश व हवास हो जायेंगें) सिवाये उन चंद हस्तियों के जिन को अल्लाह तआला (इस घबराहट और बेहोशी से) उस वक्त महफूज़ रखना चहेगा। और सब आजिजी और बेचारगी की कैफियत के साथ उसके सामने हाजिर हो जायेंगे। और तुम देखते हो पहाड़ो को (और उन के जाहिरी हाल से) तुम समझते हो कि ये (हमेशा) अटल रहने वाले हैं (और अपनी जगह से हिलने वाले नहीं हैं, मगर जब कियामत का सूर फूंका जायेगा) तो ये पहाड़ उस समय ऐसे उड़े उड़े फिरते होंगे, जैसे हवा में बादल फिरते हैं। (अन्नम्ल ८७,८८)

तर्जमाः– ऐ लोगो! अपने पर्वर्दिगार के कहर–व–जलाल से डरो, यकीन करो, कियामत का भूंचाल बड़ा ही खौफनाक होगा। जब (वह कियामत आयेगी और) तुम उसको देखोगे (तो यह हालत होगी कि किसी को किसी का होश नहीं रहेगा यहां तक कि) दूध पिलाने वाली मायें अपने दूध पीते बच्चो को भूल जायेंगी और हम्ल वालियों के हम्ल गिर जायेंगे, और उस समय लोगों को तुम देखोगे नशे की सी हालत में (बेहिस–व–हरकत) और उस वक्त वास्तव में नशे की हालत में न होंगे लेकिन (खुदा के कहर व अ़ज़ाब के डर से उनकी यह हालत होगी), अल्लाह का अजाब बड़ी ही सख़्त चीज़ हैं। (अल्लहज्जः १,२)

सूरएं–कहफ् में क़ियामत और हश्र के बयान के साथ अल्लाह तआला के दरबार में पेशी और मुजरिमों की उस वक्त की हालत को इस तरह बयान फर्माया गया है:–

तर्जमाः– और ख्याल करो उस दिन का (जब दुन्या का यह निजाम हमारे हुक्म से दरहम बरहम अस्त व्यस्त होगा, और) हम पहाड़ो को भी अपनी जगह से हटा देंगे (और जमीन की सारी आबादियां मिस्मार–ध्वस्त– करके बराबर कर दी जायेंगी) और तुम देखोगे जमीन को खुला मैदान (जिस पर न कोई पहाड़ है न कोई आबादी) और हम सब बन्दों को (दुबारा जिन्दा कर के अपनी अदालत–गाह में) जमा करेंगे, और उन में से किसी एक को भी नहीं छोड़ेंगे। और तुम्हारे पर्वर्दिगार के सामने वे कतार–कतार में पेश किये जायेंगे। (तब उनसे कहा जायेगा कि) तुम को जिस तरह हमने पहली बार दुन्या में पैदा किया था, उसी तरह (हमारे हुक्म से दुबारा जिन्दा हो कर) आज तुम हमारे पास आ गये, मगर तुम ने तो यह ख्याल बांध लिया था कि हम तुम्हारे लिये कोई वक्ते मौऊद (वापसी का वक्त) न लायेंगे (और क़ियामत जिस की खबर पैगम्बर देते हैं कभी न आयेगी, तो अब तुम ने देख लिया कि यह क्या हो रहा है) और आमाल का दफ्तर सामने रख दिया जायेगा, तो उस वक्त तुम देखोगे मुजरिमों को कि उस दफ्तर में उनके आमाल की जो तफ्सील है वे उससे डरे हुये है, वे उस वक्त (मायूसी और हसरत से) कह रहे होंगे, हाय हमारी कमबख्ती यह कैसा दफ्तर है जिसने न कोई छोटा अमल छोड़ा है और न बड़ा अमल सब ही इसमें महफूज हैं, और वे पायेंगे उसमें अपने सारे आमाल मौजूद हैं, और तुम्हारा पर्वदिगार किसी के साथ जुल्म–व–जियादती नहीं करता (वह जिन मुजरिमों के लिए अजाब और सजा का फैसला करेगा उनकी बद अअ़मालियें ही की वजह से करेगा।

इन्सान के मरने के बअ़द ता क़ियामत बरजख में रहना है। क़ियामत के हिसाब व किताब के बअ़द ईमान और अच्छे अअ़माल वालों को हमेशा जन्नत में रहना है। बुरे अ़मल वालों को दोज़ख़ में जलना है। अल्लाह तआ़ला दोज़ख़ से बचाए।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

जो चीज जिसकी नहीं है मुकद्दमा जीत लेने से उसकी नहीं हो सकती

हजरत उम्मे सल्मः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, बेशक मैं भी इन्सान हूं, तुम मेरे पास मुकद्दमा लाते हो और तुम में का बाज अपनी चर्बजबानी से काम ले लेता है। तो मैं इसी तरह करूंगा जो मैंने सुना है। अगर मैंने अपने सुनने के मुताबिक उसके भाई का हक उसको दिलवा दिया तो गोया उसके लिए आग का एक टुकड़ा काट दिया।

खूने नाहक

हजरत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मोमिन के दीन में बराबर गुंजाइश है, जब तक कि वह हराम खून न करें।

माल गैर

हज़रत खौलः बिन्त आमिर (र०) अन्सारी से रिवायत है (यह हजरत हम्जः (र०) की बीवी थी) मैंनें रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि आदमी अल्लाह तआला के माल में बगैर हक के घुसते है। इनके लिए कियामत में आग है।

मोमिन की मिसाल

हजरत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मोमिन मोमिन के लिए मिस्ल इमारत के है। एक ईंट दूसरी ईंट को मजबूत करती है।

मुसलमान की तकलीफ का खयाल

हजरत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जो शख्स हमारी मस्जिद या हमारे बाजारों के पास से गुजरे उसके पास तीर हो तो वह उसके फल रोक ले या थाम ले इस ख्याल से किसी मुसलमान को तकलीफ न पहुंच जाये।(बुखारी मुस्लिम)

मुसलमान एक जिस्म हैं

हजरत नुअमान बिन बशीर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मोमिन की मिसाल उनके आपस की मुहब्बत और रहमदिली और मिहरबानी में एक जिस्म की तरह है। जब उसका कोई अजो बीमार होता है तो सारा जिस्म जागता है। और उसको बुखार आ जाता है।

जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हसन बिन अली (र०) को प्यार किया। आपके पास अकरअ (र०) बिन हाबिस खड़े थे। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! हमारे दस लड़के है और हम किसी को प्यार नहीं करते। आपने फरमाया जो किसी पर रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता। (बुखारी मुस्लिम)

बच्चो को प्यार

हजरत आयशः (र०) से रिवायत है कि अरब के कुछ लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये, और कहा, आप क्या अपने बच्चों को प्यार करते हैं। आपने फरमाया हां। उन्होंने कहा खुदा की कसम हम नहीं प्यार करते है। आपने फरमाया, जब खुदा तआला तुम लोगों के दिलों से अपनी रहमत को खींच ले तो मैं क्या कर सकता हूं।

रहम व मिहरबानी

हजरत जरीर (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो लोगों पर रहम नहीं करता अल्लाह तआला उस पर रहम नहीं फरमाता।

कमजोरों और बीमारों के ख्याल से हल्की नमाज़

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब लोगो के साथ नमाज़ पढ़ो तो नमाज़ हल्की कर दो। इसलिए कि उनमें कमजोर भी है, बीमार भी है और बूढ़े भी हैं। और जब अकेले पढ़ो तो जितनी चाहे लम्बी कर दो।

और एक रिवायत में आया है कि ज़रूरत मन्द भी तुम्हारे पीछे होते हैं।

हज़रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाज़ ऐसे अमल जिनको आप बहुत पसन्द फरमाते थे सिर्फ़ इसलिए छोड़ देते थे कि अगर मुसलमान इसको करने लगेंगे तो उन पर फर्ज़

कर दिया जायेगा।

हज़रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को पै दर पै रोज़ः रखने से मना फरमाया तो उन्होंने कहा, या रसूलुल्लाह आप भी तो पै दर पै रोजे रखते हैं। आपने फरमाया मैं तुम्हारी तरह नहीं हूं। मैं ऐसी हालत पर रात गुजारता हूं कि मेरा रब मुझे खिलाता पिलाता है।

छोटे बच्चे की मां की रिआयत

हजरत अबू कतादह (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सललल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं नमाज़ के लिए खड़ा होता हूं और नमाज़ लंबी करने का इरादा करता हूं इतने में मैं किसी बच्चे का रोना सुनता हूं तो इस बात को नापसन्द करते हुए नमाज़ को मुख्तसर कर देता हूं कि उसकी मां को तकलीफ़ होगी।

अल्लाह की अमान

हजरत जुन्दुब (र०) बिन अब्दुल्लाह से रिवायत हे कि रसुलल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जिसने सुबह की नमाज पढ़ी वह अल्लाह की अमान में हो गया। पस देखो अल्लाह तुम्से अपनी अमान के मुतअल्लिक मुतालबा न करे। और जिससे उसने अपनी अमान के मुतअल्लिक मुतालबा कर लिया तो उसको पा लेगा। फिर उसको औन्धे मुंह जहन्नम की आग में गिरा देगा।

मुसलमान का मुसलमान पर हक

हजरत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुसलमान भाई भाई है। न उस पर जुल्म करे न उसको बे यार व मददगार छोड़े। और जो किसी की हाजत पूरी करेगा तो अल्लाह उसकी हाजत पूरी करेगा। जो किसी की तकलीफ़ को दूर करेगा अल्लाह तआ़ला उसकी तकलीफ कियामत के दिन दूर करेगा। जो किसी की सत्रपोशी करेगी अल्लाह तआला कियामत के दिन उस की सत्रपोशी करेगा।

(पृष्ठ ४ का शेष)

काम्याब हो गया। किसी को सुझाया कि तक़्लीद शिर्क है, किसी को समझाया कि चूंकि मुक़ल्लिद मुशरिक नहीं मुस्लिम है और मुस्लिम को मुशरिक कहने वाला ख़ुद इस्लाम से ख़ारिज है। कुछ लोगों को बिदआ़त की तक़्सीम में मुब्तला कर के लड़ा दिया। यह ऐसी सूरते हाल है जिससे एक नेक इन्सान का दिमाग़ फट जाए मगर "इन्न इबादी लैस लक अ़लैहिम सुल्तानुन" (मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा ज़रा भी क़ाबू न चल सकेगा।) पढ़ कर इतमीनान हो जाता है। अल्लाह अपने ख़ास बन्दों को मुतमईन कर देता है कि तक़्लीद शिर्क नहीं, तक़्लीद तो क़ुर्आन व हदीस के समझने में किसी की शागिर्दी का नाम है, तक़्लीद को शिर्क कहने वालों को यह ग़लत फ़हमी हुई कि उन्हों ने यह समझ लिया कि मुक़ल्लिद ने किताब व सुन्नत को छोड़ दिया और मुकल्लद के निकाले हुए दीन को इख़्तियार कर लिया, कोशिश करना चाहिए कि वह समझें। इसी तरह बिदआ़त में तक़्सीम करने वाले न तक़्सीम करने वालों को समझें और आपसी इख़्तिलाफ़ (मतभेद) को दूर करने की कोशिश करें अगर सब एक बात पर मुत्तफ़िक़ न हो सकें तो कम से कम यही कह कर मेल क़ाइम रखें कि जो जिसकी तहक़ीक़ हो उस पर अमल करे और हनफ़ी, मालिकी, शाफई, हंबली, बरेलवी, देवबन्दी, अहले हदीस कहलाने वाले अहले सुन्नत वल जमाअ़त भाई भाई होकर रहें और "इन्नमल मुअ् मिनून इख़्वतुन" को न भूलें। अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ से नवाज़े आमीन।

शाफ़िअ़े मदीना

मौ० मु० सानी हसनी

वो शाफ़िअ़े मदीना हैं,
हों लाखों सलाम उन पर,
हर दिल का सकीना हैं,
हों लाखों सलाम उन पर
वो शाफ़िअ़े महशर हैं,
वो साक़िये कौसर हैं,
नाज़े महो अख़्तर हैं
हों लाखों सलाम उन पर
सरकारे दो आ़लम हैं,
हर एक के हमदम हैं
वो नाज़िशे आदम हैं
हो लाखें सलाम उन पर
हर इक ग़ुलाम उन का
आ़ली मक़ाम उन का
हर लब पे नाम उन का
लाखों सलाम उन पर
वो अअ़ज़मो अफ़ज़ल हैं,
वो अकरमो अकमल हैं,
वो अहसनो अजमल हैं
हो लाखों सलाम उन पर
रहमत मुदाम उन पर
लाखों सलाम उन पर

मुसलमानों के दस अतीये प्रदान

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी नदवी

प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी इतिहासकार सरजादु नाथ सरकार ने जिनकी बहुत सी लिखित पुस्तके यूनीवर्सिटी के कोर्स में दाखिल है अपने एक निबन्ध में जो कलकत्ता के प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्रिका "प्राब्ध भारत" में प्रकाशित हुवा था, मुसलमानों के उन दस १० अतीयात (प्रदान) का ज़िक्र किया हैं जो उन्होंने हिन्दुस्तान को बख़्शे है, उन दस चीज़ों में कई चीजें हम इस मक़ाले (निबन्ध) में जिक्र कर चुके हैं। बाकी चीजें यह है:–

१. हिन्दुस्तान का संप्रक बाहरी दुन्या से

२. सियासी इत्तिहाद (राजनीतिक एकता) और लिबास और तमद्दुन (संस्कृति) की समानता, ख़ासतौर पर ऊँचे तबकों (वर्गों) में

३. एक मिली जुली सरकारी जबान और नस्र निगारी (गद्य लेखिका) का सादा उस्लूब (शैली) जिसकी तरक़्क़ी व तहजीब (सभ्यता) में हिन्दू मुस्लिम दोनो ने हिस्सा लिया

४. केन्द्री सरकार के तहत इलाक़ाई जबानों की तरक्की ताकि अम्न (शान्ति) और खुशहाली आम हो और साहित्य व संस्कृति तरक्की के अवसर प्राप्त हों सकें।

५. समुद्री रासतों से अन्तर राष्ट्रीय व्यापार की नवीनता जो पहले दक्षणी भारत के लोगों के हाथ में थी और बहुत दिनों से बन्द पड़ी थी।

६. हिन्दुस्तान के समुद्री बेड़े का प्रबन्ध।

तअमीरी कारनामें (रचनात्मक कार्य)

डाक्टर सर विलियम हन्टर (जो अपनी मुसलिम दुशमनी के लिए मशहूर है) हिन्दुस्तान में मुसलमानों के तअमीरी कारनामों (रचनात्मक कार्यों) और उनके धारमिक प्रभाव का ज़िक्र (वर्णन) करते हुवे लिखता है:–

"मुसलमानों ने दक्षिण की ओर बहुत सी प्राप्तकर्ता ज़मीनों में नई आबादियां क़ाएम कर रखी थीं, और पूरबी बंगाल में भी पहले पहले समुद्र को खुशकी से अलग किया अगर कोई सय्याह (पर्यटक) उस इलाके की सैर करेगा तो उसे आज भी दूर दूर के बेआबाद जंगलों में उनके बनाये हुवे तालाब, मस्जिदों सड़के, हौज़ और ख़ान क़ाहे (आश्रम) नज़र आयेंगी।

मुसलमान जहां भी गए अपने मजहब का प्रचार करते रहे कुछ तो तलवार के ज़रिये, लेकिन जियादा तर इन्सानी फ़ितरत (मानव प्रकृति) के दो बहुत ही अहम-एहसासात की वजह से, हिन्दुओं ने गंगा के मुहाने पर पुराने वासियों को कभी अपनी बिरादरी में शामिल नहीं किया, मुसलमानों ने समस्त मानव सुहूलतों को ब्रहमन और अछूत दोनों के सामने यकसा तौर पर पेश किया, उन पुर जोश (साहस पूर्ण) मुबल्लिग़ों (धर्म प्रचारक) ने हर जगह यह पैग़ाम सुनाया कि हर शख़्स को खुदाए बुजुर्ग बरतर की बारगाह में झुक जाना चाहिए, एक अल्लाह के सामने तमाम इनसान बराबर हैं और मिट्टी के जर्रों की तरह उन सबको अल्लाह तआला ने पैदा किया है "लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूसुल्लाह जीत के बअद जीत का नअर–ए–जंग एक इलहामी और मुतबर्रक हैसियत एखतियार कर लेता है।"

नूरानी मशअल

एक हिन्दुस्ताानी विद्वान जनाब एन.एस० मेहता साहब आई.सी.एस. अपने एक अंग्रेजी निबन्ध, "भारती संस्कृति और इस्लाम" में इस्लाम के फ़ुयूज और एहसानात (दानशीलता और उपकार) का इस तरह ज़िक्र करते हैं–

"इस्लाम यहां सिर्फ एक नूरानी मशअल लाया था, जिस ने प्राचीन काल में जबकि पुरानी संस्कृति पतन पर थी और पाकीजा मकासिद (पवित्र उद्देश्य) सिर्फ जहनी मुअतकादात (काल्पनिक आस्था) बनकर रह गए थे इस्लाम ने इनसानी जिन्दगी को छाई हुइ अंधेरियों से पाक कर दिया, दूसरे देशों की तरह हिन्दुस्तान में भी सियासत से ज़ियादा खयालात की दुन्या में इस्लाम की फ़ुतूहात (जीत) का घेरा बहुत फैला, आज की इस्लामी दुन्या में भी एक रूहानी बिरादरी है, जिसको तौहीद (अद्वैतवाद) और मसावात (समता) के मिले जुले अकीदे का ईमानी रिशता आपस में जोड़े हुए है, बदक़िसमती से इस मुल्क में इस्लाम की तारीख़ सदयों तक हुकूमत से वाबस्ता (सम्बन्धित) रही जिसकी वजह से इस्लाम के वास्तविक रूप पर परदा पड़ गया। और उसके उपकार निगाहों से छुप गए।"

इन ऐतिहासिक वास्तविकताओं को देखते हुए यह बात साफ जाहिर है कि मुसलमानों ने इस महान देश को जिस क़दर फाइदा पहुंचाया वह उस फाइदे से बहुत जियादा है जो हिन्दुस्तान ने उन्हें पहुंचाया, मुसलमानों की आमद इस मुल्क की तारीख में एक नए दौर तरक्की व खुशहाली की शुरूआत थी, जिसे हिन्दुस्तान कभी भुला नहीं सकता।

पहली किस्त

हमारी बादशाही हिन्दुस्तान

मौ० अब्दुस्सलाम किदवई

हिन्दुस्तान और अरब देशों के बीच में केवल एक समुद्र है जिस को अरब सागर कहते हैं इस समुद्र के मार्ग से दोनों देशों में बहुत जमाने से व्यापार और आना जाना काइम था। फिर मुसलमानों ने हजरत उमर (रज़ि०) के जमाने में इराक और फारस के देश इरान वालों से ले लिया तो हिन्दुस्तान के सिन्ध प्रान्त और इरान के सूबे सीस्तान की सीमाएं बिल्कुल मिलगईं। मुसलमानों की सल्तनत से अपराधी भागभाग कर सिन्ध आते और हुकूमत को परेशान करते और सिन्ध का राजा उनकी रोक थाम नहीं करता था सिन्ध और काठियावाड़ में समुद्री डाकू रहा करते थे जो मुसलमानों के जहाजों पर डाके डालते थे। हज़रत उस्मान (रज़ि०) के जमाने में बहरैन के एक शासक ने गुजरात और काठियावाड़ पर समुद्र मार्ग से हमला किया। हजरत अली (रजि०) के जमाने में सीस्तान की तरफ से कुछ मुसलमानों ने पेशकदमी की। बनू उमय्या की हुकूमत जब हुई और इराक, ईरान और तुर्किस्तान का वाइसराए कबीला सकीफ का एक मशहूर सरदार और सेनापति हज्जाज बिन यूसुफ के जमाने में जिस को हज्जाज सकफी भी कहते हैं सिन्ध के डाकुओं ने मुसलमानों के जहाज पर डाका डाला और मुसलमान औरतों को पकड़ ले गये। इस पर हज्जाज ने जल और थल दोनों तरफ से सिन्ध पर हमला कर दिया। इस हमले का सेनापति उस के अपने एक भतीजे मुहम्मद बिन कासिम, जो फारस में रहता था, बनाया। मुहम्मद बिन कासिम उस समय अट्ठारह वर्ष का नौजवान था मगर वह साहस और बहादुरी और बुद्धिमानी में बड़ों का मुकाबला करता था। मुहम्मद ने सीस्तान के मार्ग से आकर सिन्ध पर हमला किया और इराक से मुसलमानों की दूसरी फौज ने समुद्र के रास्ते से आकर दूसरी तरफ से सिन्ध पर हमला कर दिया। मुसलमानों और सिन्ध के राजा से कई लड़ाइयां हुईं। आखिर मुसलमानों ने सिन्ध और मुलतान पर कब्जा कर लिया और यहां खुद शासन करने लगे।

यह घटना सन् ६३ हि० (७११७ ई०) में वलीद बिन अब्दुल मलिक की खिलाफत के जमाने में हुई। और उस समय से लेकर मुअतसिम अब्बासी की खिलाफत के जमाने तक खलीफा की तरफ से कोई हाकिम आकर यहां हुकूमत करता था। मुअतसिम के बाद जब बगदाद में मुसलमानों की सल्तनत कमजोर हो चली तो सिन्ध और मुलतान के मुसलमान हाकिमों ने अपना स्वतंत्र राज्य यहां काइम कर लिया जो सन् ४०० हि० तक किसी न किसी तरह चलता रहा।

चौथी सदी के आखिर में अफगानिस्तान के शहर गज़ना में जब एक मुसलमान तुर्क गुलाम सुबुक्तगीन ने अपनी सल्तनत काइम की तो पंजाब की राह से उस की सरहदी छेड़छाड़ शुरू हुई जो धीरे–धीरे बढ़ गई। सुबुक्तगीन के बाद उस का बेटा सुल्तान महमूद गज़नवी तख्त पर बैठा तो उस ने मुलतान व सिन्ध के मुसलमान शासकों से लड़कर उन प्रांतों पर कब्जा कर लिया। पंजाब के राजा से, जिस ने उस को मुलतान जाने का रास्ता नहीं दिया था, लड़ा और लड़कर पंजाब को अपने राज्य में शामिल कर लिया। फिर काठियावाड़ में सोमनाथ नाम के एक शहर पर जो समुद्र के किनारा था और जहां हिन्दुओं का एक मशहूर मन्दिर था बड़ी बहादुरी से रेगिस्तान पार करके चढ़ाई की और बुत को तोड़ दिया और उस प्रांत की हुकूमत को वहां के असली हिन्दू राजा को देकर चला गया।

सुलतान महमूद ने हिन्दुस्तान पर सत्रह हमले किये और हर हमले में उस ने कोई न कोई शहर फतह किया लेकिन उसने अपनी हुकूमत सिन्ध मुलतान और पंजाब तक सीमित रखी और उसकी राजधानी शहर लाहौर को बनाया। महमूद सन् ४२१ हि० में गजनी में मर गया। उसके बाद उसके बेटे सुलतान मसऊद ने फिर एक के बाद एक कर के गजनैन के कई बादशाहों ने इस देश पर हुकूमत की और अक्सर गजनैन में और कभी कभी लाहोर में रहते थे।

सन् ५८२ हि० में यह सल्तनत खत्म हो गई। घटना यह हुई कि गज़नैन से कुछ दूर गौरी का पहाड़ी देश था। यहां के लोगों ने धीरे–धीरे बढ़ना शुरू

किया आखिर बहराम शाह के जमाने में ग़ौर के सरदारों की ताकत बढ़ गई और गज़नवीयों को गज़नैन से भाग कर लाहोर जाना पड़ा। आख़िर के गजनवी बादशाहों ने यहीं हुकूमत की। ग़ौरियों ने पहले गज़नैन पर कब्जा किया।

फिर हिन्दुस्तान पर हमला करके उन से हिन्दुस्तान की हुकूमत छीन ली अब गज़नवी के बाद ग़ौरी खान्दान शुरू हुआ। सुल्तान शहाबुद्दीन ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की सन् ५८८ हि० (११६३ ई०) दिल्ली अजमेर और कन्नौज के राजाओं की प्राजय हुई और गंगा के किनारे से पेशावर तक बादशाहत काईम हो गई। शहाबुद्दीन खुद तो हिन्दुस्तान में न रहा लेकिन अपने गुलाम कुतबुद्दीन को यहां अपना सहायक नियुक्त कर गया। यही कुतुबुद्दीन है जिससे हिन्दुस्तान में बादशाहत की शुरूआत हुई जो सात सौ वर्ष तक काइम रही।

कुतबुद्दीन खुद गुलाम था। उस के बाद के बादशाह भी ऐसे ही थे। इसलिए इतिहास में यह खानदान गुलाम खानदान के नाम से मशहूर है। वैसे तो इसमें छोटे बड़े सब मिलाकर दस बादशाह हुए लेकिन कुतबुद्दीन के अतिरिक्त अल्तमश, नासिरूद्दीन महमूद और ग्यासुद्दीन बलबन तीन बहुत प्रसिद्ध हुए हैं। सल्तनत कुतबुद्दीन के जमाने ही में पूरब की तरफ बंगाल और दक्षिण की तरफ सिन्ध व मालवा तक पहुंच गई थी, बाद को शमशुद्दीन अल्तमश नासिरूद्दीन महमूद और ग्यासुद्दीन बलबन के जमाने में और उन्नति हुई और हिन्दुस्तान के सारे अच्छे अच्छे इलाके मुसलमानों के कब्जे में आ गये। बलबन के बाद कोई वैसा समझदार और हिम्मत वाला इस खानदान में न निकला। कैकबाद तख्त पर बैठाया गया लेकिन उस ने ऐसी रंगरलियां मनाईं कि तीन ही वर्ष के बाद खिलजी खानदान के एक सरदार जलालुद्दीन ने सल्तनत पर कब्जा कर लिया। (६९७ हि० अर्थात १२९० ई०)। जलालुद्दीन के बाद उस का भतीजा अलाउद्दीन खिलजी बादशाह हुआ और बीस वर्ष तक बड़े रोबोदाब से हुकूमत की। अलाउद्दीन यद्यपि स्वभाव का सख्त था परन्तु प्रबन्ध का बड़ा पक्का था। सारे देश में अमन था और हर तरफ खुशहाली फैली हुई थी। उसके बाद फिर खिलजीयों में कोई ऐसा जोरदार बादशाह न हुआ बल्कि गजब यह हुआ कि खुसरो नामी एक गुलाम सल्तनत का मालिक हो गया। उसने वह अत्याचार किये कि खुदा की पनाह । मस्जिदें और कुर्आन शरीफ़ तक अपमान से बच न सके। यह सुनकर मुसलमान बिल बिला पड़े। पंजाब प्रान्त के सूबेदार गाजी मलिक ने दिल्ली पर चढ़ाई की। खुसरो मारा गया औरा गाजी मलिक ग्यासुद्दीन तुगलक ने नाम से बादशाह बना। उससे बड़ी–बड़ी आशाएं थीं लेकिन अफसोस मौत ने मोहलत न दी और पांचवें वर्ष उस का देहान्त हो गया। उस के बाद उस का लड़का मुहम्मद तुगलक तख्त पर बैठा। यह बड़ा बहादुर, बहुत बुद्धिमान और बहुत ही समझदार था। उस ने देखा कि बाहर से बराबर हमले होते रहते हैं। इसलिए कोशिश की कि सीमाएं मजबूत हो जाएं। इस ख्याल से उसने तिब्बत, चीन और खुरासान को फतह करने का निश्चय किया और फौजें रवाना कर दीं। लेकिन हालात कुछ ऐसे पेश आये कि यह इरादा पूरा न हो सका। देश के अन्दर भी सल्तनत बढ़ गई थी अब देहली में रहकर सारे सूबों की निगरानी और जरूरत के समय फौजों की रवानगी बहुत कठिन थी। इसलिए मुहम्मद तुग़लक़ ने बीच सल्तनत में दौलताबाद को राजधानी बनाना चाहा। सब सामान आ गया था कि एक बारगी मुगलों के हमले की सूचना मिली मजबूरन उसे यूंही छोड़ देना पड़ा।

मुहम्मद तुग़लक़ ने कुछ दिनों के लिए तांबे का सिक्का भी चलाया था लेकिन प्रजा को पसन्द न आया तो वापस ले लिया और इसके बदले सोने के सिक्के दे दिये। इन बातों की वजह से लोग उसे पागल कहते हैं लेकिन सोचो तो इसमें पागलपन की क्या बात है। सीमा की सुरक्षा और बीच में राजधानी बनाने को कौन बुरा कह सकता है। इस समय आखिर कागज के नोट चलते ही हैं फिर तुगलक बेचारे ने तांबे के सिक्के चलाकर क्या गुनाह किया था । ७९२ ई० (१२५१ ई०) में मुहम्मद तुगलक का देहान्त हो गया और उस का चचाजाद भाई फिरोज तख्त पर बैठा यह बड़ा नेक और दीनदार था। उसने अपने जमाने में देश को आबाद और खुशहाल कर दिया। चालीस वर्ष की हुकूमत के बाद फिरोज का देहान्त हो गया। उस के देहान्त के बाद फिर बड़ी गड़बड़ शुरू हो गयी। अभी यह मुसीबत समाप्त न हुई थी कि तैमूर आ पहुंचा। जब बादशाह में कुछ सकत न थी तो प्रजा क्या करती। नतीजा यह हुआ कि तैमूर दिल्ली पहुंच गया और सारे शहर में लूटमार शुरू हो गई तैमूर तो कुछ

दिनों के बाद चला गया लेकिन यहा वही गड़बड़ी रही। आखिर पंजाब के सूबेदार सैय्यिद खिजिर खान ने तख्त पर कब्जा कर लिया लेकिन दिल्ली के आगे उनका नियंत्रण कहीं न था। तमाम सूबेदार अपनी अपनी जगह मालिक बन गये थे। कुछ दिनों तक दिल्ली के आस पास उन लोगों की हुकूमत रही आखिर सन् १४५१ ई. में बहलोल लोदी ने यहां भी कब्जा कर लिया। बहलोल और उसका बेटा सिकन्दर दोनों बड़े लाएक थे। उन्होंने अपनी हिम्मत और सूझबूझ से सल्तनत को आगे बढ़ाया और बिहार तक अपनी हुकूमत काइम कर ली। अगर सिकन्दर के बाद एक और वैसा ही बादशाह हो जाता तो सल्तनत की जड़ें मजबूत हो जातीं लेकिन उस के बेटे इब्राहीम लोदी में ऐसी क्षमता न थी। परिणाम यह हुआ कि मुगल बादशाह बाबर काबुल से चल कर हिन्दुस्तान आया। पानीपत के मैदान में दोनों फौजों का मुकाबला हुआ। अगरचिः इब्राहीम के पास एक लाख फौज थी लेकिन बाबर इस ढंग से लड़ा कि केवल बारह हजार सवारों ने इतनी बड़ी फौज के पैर उखाड़ दिये। इब्राहीम मैदान में मारा गया और मुगलों का हिन्दुस्तान पर कब्जा हो गया। जो तीन सौ वर्ष तक यहां हुकूमत करते रहे । (१५२६ ई०) बाबर के बाद हुमायूं तख्त पर बैठा, लेकिन कुछ ही दिनों बाद शेरशाह सूरी के मुकाबले में प्राजित होकर उसे ईरान की तरफ भागना पड़ा। (जारी)

मेरे जरीअे से जो बात भी सीखो उस को मेरे हवाले से दूसरें तक पहुंचा दो चाहे वह एक ही बात हो।
(मफ्हूमे हदीस)

(पृष्ठ १४ का शेष)

के पी०एच०डी० और डाक्ट्रेट की डिग्री प्राप्त करते हैं। कहीं भी ऐसे मदरसे नहीं है जहां हिन्दू भाइयों का आना जाना न हो। मदरसे कोई छुपे हुए थोड़ी ही हैं। मैं बड़ें अदब से अपने बाज मुल्की भाइयों से कहता हूं कि मदरसे के बारे में वह जो भ्रमात्मक वातावरण बना रहे हैं वह बनेगा नहीं और मदरसों को आप बन्द भी नहीं करा सकेंगे न कानून से न धौंस से। अगर आप मदरसों को बन्द करने लगेंगे तो अरबी, उर्दू और बहुत सी भाषाओं से हमारा नाता टूट जाएगा। हमारे पड़ोसी देश से जों उठापटक हो रही है उसमें नादान लोग भिड़ गए हैं जो समस्या को सुलझाने के बजाए और उलझाते रहते हैं। इस राजनीतिक उलझाव में अपने देश के अरबी मदरसों और मुस्लिम आलिमों पर इलजाम लगाने और उनके बारे में कुछ कहने से पहले अच्छी तरह सोच–विचार कर लें और सही जानकारी ले लें उस के बाद ही कुछ कहें तो उचित होगा।

रात के पिछले हिस्से में दुआ कर सकते हैं –

अब रही यह बात कि मदरसे वाले कुछ बोलते नहीं तो वह इसलिए खामोश हैं कि बोलने वाले बोल रहे हैं और लिख रहे हैं इस में हम कहां जाकर बोलें। मैं आप से कहता हूं कि मदरसे में ऐसे ऐसे उलमा और अल्लाह वाले हैं कि पिछली रात के हिस्से में अपने मालिक के सामने हाथ उठा कर दुआ करदें तो दुआ वापस नहीं जाती। इसको भी आप सब को ध्यान में रखना चाहिए, बुहतान और लानक्षन ऐसी चीज है कि इसको किसी ने भी पसंद नहीं किया। किसी ने जुर्म नहीं किया और खामख्वाह उस के पीछे लगा दिया जाए यह क्या बात हुई?

अल्लाह तआला हम सब को भलाई और नेकी की तौफीक दे।

(पृष्ठ १५ का शेष)

वक़्त तक अगर कोई और सबब पाख़ाना, पेशाब वग़ैरह नही हुआ है तो सिर्फ़ क़त्रा आने से वुज़ू न टूटेगा और दूसरी नमाज़ का वक़्त आते ही वुज़ू टूट जाएगा। ऐसे मअ़ज़ूर ने अगर ज़ुहर की नमाज़ के लिए वुज़ू किया तो अब अ़स्र का वक़्त आने से पहले तक क़त्रा आने से उस का वुज़ू न टूटेगा फ़र्ज़ के बअ़द सुन्नतें और जितनी चाहें नफलें पढ़ सकता है,क़ुर्आने मजीद छू सकता है और तिलावत कर सक़ता है। मअ़ज़ूर शख़्स सहीह लोगों की इमामत नहीं कर सकता।

नअ़ते रसूले पाक

इक्बाल आज़मी

जिस जिस गली से गुज़रे हैं होकर कभी हुज़ूर
उस में बसी हुई है नकहत न पूछिये
नअ़ते नबी की फिक्र में शाम व सहर दुरूद
हम से हमारी तर्ज़े इबादत न पूछिये
हर सिन्फ़े शिअ़र अपनी जगह खूब है मगर
नअ़ते रसूले पाक की लज़्ज़त न पूछिये
जिस का अ़मल भी ठीक हो इक़्बाल साथ साथ
उस नअ़तगो की हुस्ने अ़क़ीदत न पूछिये

आखिरी किस्त

हिन्दोस्तान में दीनी मदरसों का दौर

मौ० अब्दुल करीम पारीख

बेसिर पैर का लांक्षन अरबी मदरसों के बारे में एक तरफ बातें कही जाती हैं जो लगभग सब की सब बेसिर पैर की होती हैं। बोहतान वाली बातें होती हैं जिसे लांक्षन कहते हैं। मुसलमानों की ऐसी अक्सरियत जो इस उपमहाद्वीप में इण्डोनेशिया के बाद सब से बड़ी संख्या में रहती है जो हिन्दुस्तान में बसते हैं और हिन्दुस्तान ही को अपना वतन मानते हैं, उन पर भरोसा और विश्वास न करना, सुनी सुनाई खबरें या फिर जान बूझ कर अफवाहें फैलाकर उन के मनोबल को घटाने से देश की हानि होगी। मैं आप से यह निवेदन करूंगा कि देश के बड़े मदरसों में मेरा आना जाना होता है। बाज मदरसे तो आप को ऐसे मिलेंगे जिस के हाते में गवर्नमेंट आफ इण्डिया का डाकखाना खुला हुआ है और स्टेट बैंक आफ इण्डिया की शाखा भी खुली हुई है। हजारों लड़के पढ़ते हैं उनके भी एकाउंट रहते हैं। अध्यापक और कर्मचारी भी हैं और राह चलते लोग भी वहां आकर पैसा जमा करते हैं चुके भुनाते हैं, ड्राफ्ट आदि बनवाते हैं और डाक घर से टिकट आदि लेते हैं। जब इन मदरसों के दरवाजे हर एक के लिए दिन भर खुले हों वहां आतंकवादियों के अड्डे और केन्द्र हो सकते हैं?

बड़े बड़े लोग मिलने के लिए आ रहे हैं — मैंने हजरत अली मियां साहब (रह०) के जमाने में देखा है कि नदवे में इन्द्राजी मिलने के लिए चली आ रही हैं, नरायन दत्त तिवारी जी मिलने के लिए आ रहे हैं, गर्वनर आ रहे हैं, मंत्री और सरकारी अधिकारी मिलने के लिए आ रहे हैं, बहुगुणा जी भी मिलने चले आ रहे हैं। अभी सभी आखिरी दिनों में हम ने देखा कि ममता बनरजी आ रही हैं, मुलायम सिंह यादव आ रहे हैं और ऐसे कितने ही छोटे बड़े मदरसे हैं, जहां बड़े–बड़े लोग और सरकारी अधिकारी व जिम्मेदार आते जाते रहते हैं बैठते हैं, उलमा से मिलते हैं। देवबन्द मदरसा वह भी बहुत बड़ा मदरसा है वहां भी लोग दिन भंर आते जाते रहते हैं। मज़ाहरूल उलूम सहारनपुर है और उधर दक्षिण में भी दारूल उलूम हैदराबाद, दारूल उलूम सबीलुस्सलाम हैदराबाद, दारूल उलूम सबील इर्शाद बंगलौर और राजिस्थान में जामियां हिदायत जयपुर और पूरे देश में एक से एक बड़े–बड़े मदरसे हैं मुसलमानों का यह इतना बड़ा काम है कि इस पर हमारे हिन्दू भाइयों को खुश होना चाहिए था कि बाहरी देश के लड़के हिन्दुस्तान में इल्म दीन पढ़ने के लिए आते हैं और हिन्दुस्तानी उलमा और हिन्दुस्तान के मदरसों से सनद (डिग्री) और प्रमाण पत्र लेते हैं और हम अपने ही यहां की इतनी बड़ी मुस्लिम आबादी को बदनाम कर रहे हैं, जिस की दुन्या में पचासों हुकूमतों और दुन्या में पेट्रोल और सोना और गैस इस उम्मत के पैरों के नीचे अल्लाह ने रख दिया है, मैं इसपर बड़ाई और गर्व नहीं करता, मैं तो केवल अल्लाह की बड़ाई करता हुआ बोलता हूं कि मुस्लिम उम्मत और कौम से भारत को लाभ पहुंच रहा है और देश का नाम हो रहा है। अतएव इस के बारे में रोजाना समाचार पत्रों में आतंकवाद, आंकवादी और इधर उधर की खबरें फैलाना उचित नहीं है।

आतंकवाद पूरे संसार में फैल चुका है — मानता हूं इस समय पूरी दुन्या में आतंकवाद फैला हुआ है और कोई देश भी इस से सुरक्षित नहीं है। अब यह कि कुछ लोगों ने इस्लाम का नाम ले लिया तो उस में मदरसे वालों का कुसूर नहीं है। एक बात यह भी कहना चाहूंगा कि क्या हिन्दुस्तान की बड़ी बड़ी यूनिवर्सिटियों, कालेजों और स्कूलों आदि में जुवारी, शराबी लड़के नहीं होते? चोरी करने वाले, कत्ल करने वाले, लड़कियों के साथ छेड़खानी करने वाले, लड़कियों को लेकर भाग जाने वाले, प्रोफेसरों और अध्यापकों की पिटाई कर देने वाले नहीं होते? बहुत कठिन होता है कि कोई कालेज का प्रोफेसर या यूनिवर्सिटी का जिम्मेदार ऐसे लड़कों को अपने कालेज और यूनिवर्सिटी से निकाल दे लेकिन मदरसे में यह मालूम हो कि यह लड़का शरारती है या उसकी आदतें ठीक नहीं है तो मदरसे के

जिम्मेदार और उलमा ऐसे लड़के को मदरसे से निकाल देते हैं, मदरसे में रहने नहीं देते। अरबी मदरसों का यह तरीका है उसे यूनिवर्सिटी और कालेज वालों को भी अपनाना चाहिए।

मदरसों को बन्द कराने की बात कहते हैं –

बाज़ लोग मदरसों को बन्द कराने की भी बात करते हैं। यह बचकाना पन है। यह कोई सोच और फिक्र नहीं है। मदरसे वाले लाखों लाख यतीम बच्चों और गरीब बेसहारा लड़कों को खाना खिलाते हों उनको पढ़ना लिखना सिखाते हों। उन के रहने सहने दवा इलाज का इंतजाम करते हों, कपड़ा देते हों और उन बच्चों को पढ़ा लिखा कर भला और शरीफ इंसान बनाने की कोशिश करते हों। इन मदरसों को अगर बन्द कर दें तो इन में पढ़ने वाले बच्चों को पढ़ाना, लिखाना अच्छा इंसान बनाना तो दूर की बात है हुकूमत उन को दो टाइम खाना नहीं खिला सकेगी। आजादी के पचास वर्ष बीत चुके क्या हुकूमत सारे हिन्दुस्तानियों को पढ़ा लिखा सकी है? सब को रोजगार दिला सकी है जबकि करोड़ों रूपये पढ़ने पढ़ाने और शाक्षरता मिशन पर खर्च हो रहे हैं। बहुत सी योजनाएं बनती हैं फिर भी क्या हुकूमत सब के लिए या अक्सर लोगों के लिए तालीम का इंतजाम कर सकी है ?

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद मदरसे के आदमी थे –

भारत के सबसे पहले राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी अरबी मदरसे के पढ़े हुए थे। हजरत मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी साहब (रह०) लिखते हैं कि – एक लड़का चूड़ीदार पैजामा कलीदार कुरता दो पल्ली टोपी पहनकर और बुग़दादी क़ायदा लेकर मस्जिद के मकतब में पढ़ने जा रहा है। आप पूछेंगे यह किस की तसवीर है ? मौलाना अब्दुल माजिद साहब दरयाबादी (रह०) आगे अपने लेख में लिखते हैं यह थे हमारे राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद साहब। आप बताइये कि इतने बड़े इंसान एक अरबी मदरसे के पढ़े हुए थे और केवल यह एक ही नहीं बल्कि हजारों हजार ऐसे महान आदमी मिलेंगे जो मदरसे के पढ़े हुए हैं। विभाजन जब हुआ वह मेरी जवानी का जमाना था। हमारे मध्य भारत नागपुर आदि में पंजाब और सिंध से ऐसे लोग आए जो सभी उर्दू और फारसी पढ़े हुए थे। लाला विलायती राम पंजाब से आकर हमारे करीबी पड़ोसी हुए। वह उर्दू में बही खाते लिखते थे मैंने देखा तो उन से कहा कि लाला जी फंस जाएंगे आप। यह तो हिन्दुस्तान है यहां लोग अंग्रेजी, हिन्दी जानते हैं। आप हिन्दी में बही खाते लिखिये। कहने लगे हम तो उर्दू जानते हैं इसी में लिखते हैं। मैं ने उनसे पूछा उर्दू कहां पढ़ी? उन्हों ने बताया कि मस्जिद के मकतबे में मोलवी फजलदीन के पास पढ़ी। सिन्ध, पंजाब से आए हुए बहुत से लोग लिपि के लिहाज से उर्दू फारसी प्रयोग करते थे। उन से पूछने पर यह जवाब होता था कि हम ने फारसी और उर्दू मस्जिद के मकतबे में फुलां मोलवी साहब से पढ़ी।

हिन्दु मुसलमान सम्बन्ध :

यह थे हमारे हिन्दू मुसलमानों के सम्बन्ध लेकिन इस समय दोनों को मालूम नहीं क्या हो गया है? पाकिस्तान बनवाकर अंग्रेजों ने हम हिन्दुस्तानियों को ऐसा इंजेक्शन दिया कि अब तक हिन्दुओं और मुसलमानों से इसका असर समाप्त नहीं हुआ है। मैं दोनों से ही अपील करूंगा कि हमें अक्ल के नाखून लेना चाहिए। हिन्दुस्तान की मिली जुली जो असल सभ्यता है कि सभी धर्मों के लोग यहां हैं और सभी के साथ हमारा भाईचारा रहा है और इस देश के लिए सब की सेवाएं भी रही हैं इसे हमें मानना चाहिए। आन्ध्र प्रदेश के गवर्नर और फिर उपराष्ट्रपति हुए श्री कृष्ण कान्त जी मेरे अच्छे मित्र थे। उन का अभी अभी देहान्त हुआ यह मदरसे के पढ़े हुए थे उर्दू जानते थे और उर्दू में शाएरी भी करते थे। खुद इन्द्र कुमार गुजराल साहब पूर्व प्रधानमंत्री भी उर्दू के अच्छे स्कालर हैं। उन से मैंने कभी पूछा तो नहीं कि आप ने उर्दू कहां पढ़ी? लेकिन यदि पूछा जाये तो मालूम होगा कि उन्होंने भी किसी न किसी मोलवी साहब से उर्दू भाषा पढ़ी होगी।

बड़े मदरसों की लाइब्रेरियों में प्रोफेसरों का आना जाना –

बड़े बड़े मदरसों के अन्दर जो हमारी लाइब्रेरियां हैं उसे देखने के लिए और लिखने पढ़ने के लिए उन से लाभ उठाने के लिए यूनिवर्सिटीयों के प्रोफेसर व लेक्चरर, जिन में अधिकांश हिन्दू होते हैं, आते हैं। पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। मदरसों की लाइब्रेरियों में अरबी, फारसी, उर्दू के अतिरिक्त अंग्रेजी हिन्दी और दूसरी बहुत सी भाषाओं की दुर्लभ और कीमती पुस्तकें होती हैं, उनका अध्ययन कर

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : हम दो साथी रेल में सफ़र कर रहे थे, फ़ज्र के वक़्त फर्ज़ की नमाज़ पढ़ने की सहूलत न मिल सकी सूरज निकल आने के बअ्द जमाअ़त से फज्र अदा की तो इमाम ने क़िराअत ज़हरन की प्रश्न है कि दिन में पढ़ी गई नमाज़ में जहरी क़िराअत से नमाज़ हो गई या नहीं?

उत्तर : फ़ज्र की फर्ज़ नमाज़ अगर किसी सबब से वक़्त पर न पढ़ी जा सकी और दिन में जमाअ़त के साथ अदा की जाए तो इमाम के लिए ज़रूरी है कि वह जहरन क़िराअत करे। इस लिए प्रश्न में पूछी गयी नमाज़ हो गई। अगर इमाम जहरन क़िराअत न करता तो नमाज़ न होती।

प्रश्न : एक शख़्स ने वुज़ू करके ख़ुफ्फ़ैन (चमड़े के मोज़े) पहन लिये और सफ़र पर निकल गया, सफ़र में वह वुज़ू के वक़्त ख़ुफ्फ़ैन पर मसह करता रहा, वह तीन दिन और तीन रात गुज़रने से पहले अपने घर वापस आ गया, घर पहुंचते ही उसे कोई नमाज़ पढ़ना है क्या वह अब भी ख़ुफ्फ़ैन पर मसह कर सकता है या ख़ुफ्फ़ैन उतार कर पैर धोना ज़रूरी है ?

उत्तर : ख़ुफ्फैन उतार कर दोनों पैर धोने जरूरी हैं। क़ियाम की सूरत में ख़ुफ्फ़ैन पर मसह सिर्फ़ २४ घंटे तक कर सकते हैं और सफ़र में तहारत की हालत में पहने हुए ख़ुफ्फ़ैन पर वुज़ू में तीन दिन तीन रात तक मसह कर सकते हैं, उस के बअ्द पैर धोने पड़ेंगे और तीन दिन तीन रात से पहले और २४ घन्टों के बअ्द वापस आकरा मुक़ीम हो गये तो मसह की मुद्दत ख़त्म हो गई अब वुज़ू में ख़ुफ्फ़ैन उतार कर पैर धोने पड़ेंगे।

प्रश्न : सजदे की हालत में अगर दोनों पैर उठे रहें तो नमाज़ हो जाएगी या नहीं?

उत्तर : अगर पूरे सजदे में पांव उठे रहें तो नमाज़ न होगी, ऐसी पढ़ी हुई नमाज़ का दुहराना ज़रूरी है लेकिन अगर पैर ज़मीन पर सुब्हानल्लाह कहने के वक्त के बराबर ज़मीन पर लगे रहे फिर उठ गये या पहले उठे हुए थे फिर सुब्हानल्लाह कहने के वक़्त तक ज़मीन से लगा लिये तो नमाज़ हो जाएगी। मगर नमाज़ का अदब यह है कि ख़ूब ध्यान दे कर सज्दों में पूरे वक़्त पांव के पंजे ज़मीन से लगाए रखें।

प्रश्न : मुसलमान औरतों के लिए साड़ी पहनना जाइज़ है या नहीं ?

उत्तर : इस्लाम में लिबास का अहम मक़्सद "सत्रे औरत" अर्थात जिस्म के जिन हिस्सों को छुपाना ज़रूरी है वह छुप जाएं और औरत को पूरा जिस्म छुपाना है, पस अगर साड़ी से यह मक़्सद हासिल है तो साड़ी पहनने में कोई हरज नहीं।

प्रश्न : एक शख़्स को पेशाब के क़त्रे बराबर आते रहते हैं वह नमाज़ किस तरह अदा करे?

उत्तर : कुछ लोगों को यह बीमारी होती है कि पेशाब कर लिया, पानी या ढेले से पाकी हासिल कर ली, कपड़े पहन लिये उस के बअ्द पेशाब के दो एक कत्रे आ गये और कपड़ा गन्दा हो गया। ऐसे लोग एहतिमाम करें कि नमाज़ से ज़ियादा पहले पेशाब से फ़ारिग हो लें, लंगोट बांधें, लंगोट की पट्टी में कपड़े की गद्दी रखें और नमाज़ के वक़्त वह गद्दी अलग कर के नमाज़ पढ़ें या जांघिया (अंडर वियर) पहनें और नमाज़ से पहले अन्डर वियर उतार कर वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ें। याद रहे कि मुआफ़ी की मिक़्दार से ज़ियादा पेशाब लगे हुए कपड़े के साथ तो नमाज़ सिरे से होगी नहीं लेकिन बक़द्र मुआफ़ी पेशाब लगा है और नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ तो हो जाएगी मगर मक्रूह होगी अगर कोई मजबूरी न हो तो थोड़ी सी नजासत भी धोने का एहतिमाम चाहिए। पेशाब या इसी तरह की पतली नजासते ग़लीज़ा जैसे खून, शराब वग़ैरह की मुआफ़ी की मिक़्दार एक दिर्हम का एरिया है जिसे बअ्ज़ उ़लमा ने बड़े वाले रूपये के सिकके के बराबर बताया है जिस का क़ुत्र (व्यास) लगभग ३० मिलीमी० होता है। जिस को ऐसा रोग हो कि उस का पेशाब रूकता ही न हो, एक वक़्त की नमाज़ अदा करने के वक़्त के लिए भी न रूकता हो ऐसा शख़्स शरीअ़त में मअ्ज़ूर कहलाता है। ऐसे शख़्स को चाहिए कि लंगोट बान्धे, कपड़े की गद्दी रखे ताकि पैजामा लुंगी वग़ैरह गंदगी से बचे रहें और हर नमाज़ के लिए ताज़ा वुज़ू करे, जिस नमाज़ के लिए वज़ू किया है उस नमाज़ के आख़िर

(शेष पृष्ठ १२ पर)

दलाई लामा ने इस्लाम को दया का धर्म करार दिया

शिकागो (आई.ए.एन.एस.), तिब्बतियों के सर्वोच्च गुरु दलाई लामा ने इस्लाम को दया का धर्म करार देते हुए इस धर्म को लेकर पैदा हुई गलतफहमी को बेमानी करार दिया है।

अमरीका की यात्रा पर आए दलाई लामा ने ३० से अधिक देशों के मुस्लिम एवं दूसरे धर्मों के नेताओं से मुलाकात की। ये धार्मिक नेता इस्लाम की धूमिल होती छवि में सुधार के उपायों पर चर्चा के लिए सैन फ्रांसिस्को शहर से ही शुरू हुई है। सैन फ्रांसिस्को में अंतर–धार्मिक वैश्विक सम्मेलन में दलाईलामा ने अपना विचार प्रकट किया। इस अंतर–धार्मिक सम्मेलन के आयोजक जेतुना इंस्टीट्यूट के अधिकारियों को धार्मिक क्षेत्र में दलाईलामा के प्रभाव का एहसास है, इसलिए उन्हें खासतौर पर इस सम्मेलन में आमंत्रित किया गया। एक हालिया सर्वेक्षण के मुताबिक ३८ फीसदी अमरीकी इस्लाम धर्म को मानने वालों को पसंद नहीं करते। अमरीका में दलाईलामा की छवि एक उदारवादी धार्मिक नेता की है। गैलप द्वारा अमरीका में कराए गए हालिया सर्वेक्षण के मुताबिक ३८ फीसदी अमरीकी इस्लाम के प्रति आदर भाव नहीं रखते। कैलिफोर्निया के एक जाने–माने इस्लामिक विद्वान इमाम सैयद मेहदी खोरसानी के आमंत्रण पर दलाईलामा यहां आए हैं। इमाम ने अमरीका में पिछले साल दलाई लामा से मुलाकात की थी और उन्होंने धार्मिक चरमपंथ का मुकाबला करने के लिए दलाई लामा से ''धार्मिक संयुक्त राष्ट्र' के गठन की पहल में मदद मांगी थी। दलाईलामा ने कहा कि सदियों से उनकी जन्मभूमि तिब्बत में बौद्ध धर्मावलंबी और मुसलमान एक साथ रहते आए हैं। दलाईलामा ने कहा कि कुछ लोगों की यह धारणा गलत है कि इस्लाम आतंकवाद का धर्म है। इस्लाम दुनिया के महान धर्मों में से एक है और यह सदियों से प्रेम और दया का संदेश देता रहा है। उन्होंने कहा कि जो लोग इस्लाम के बारे में गलत धारणा रखते हैं, उन्हें इस्लाम ग्रंथ पढ़ना चाहिए। (पंजाब केसरी १८.४.२००६)

दलाईलामा के इस बयान का शुक्रिया। इस्लाम एक खुला सत्य है जिस का जी चाहे इस सत्य का अध्ययन करे जिस ने निष्पक्ष हो कर इस सत्य का अध्ययन किया उस ने इस सत्य को पा लिया आज कितने अमरीकी इस्लाम को अपना रहे हैं। (सम्पादक)

पानी तथा हमारा शरीर

जमाल नसरत

हमारे शरीर में ७१ प्रतिशत पानी है, शरीर का पानी मूत्र, पसीने और पाखाने की शक्ल में शरीर से निकलता है जब हम सांस लेते हैं तो उस में भी भाप के रूप में हमारे शरीर का पानी निकलता रहता है, जब हम विश्राम करते अथवा सोते हैं तब भी लगभग १५० मिली लीटर प्रति घण्टे के हिसाब से हमारे शरीर से पानी बाहर निकलता रहता है जिसे हम पानी पी कर पूरा करते हैं। कम पानी के कारण कमजोरी पैदा होगी तथा अगर यह कभी जियादा हो जाए तो मृत्यु भी सम्भव हो सकती है। चिकित्सा विशेषज्ञों (माहरीने तिब) के अनुसार एक व्यक्ति को एक दिन में ८ लीटर पानी पीना चाहिए। अगर हमारे शरीर का केवल १५ प्रतिशत पानी कम हो जाए तब भी मृत्यु हो सकती है। इसी लिए हैजा या पेचिश जैसी बीमारियों में अधिकतर पानी के प्रयोग करने के लिए कहा जाता है, इसमें ग्लूकोज भी दिया जाता है।

शरीर में ४ प्रतिशत पानी प्लाजमा के रूप में रक्त में है, शरीर के खलियों को बाहर ४० प्रतिशत पानी है और खलियों के अन्दर १६ प्रतिशत पानी है, इसके अतिरिक्त ४० प्रतिशत पानी शरीर के दूसरे भागों में है। पेट, फेफड़ों और जिगर के अतिरिक्त हड्डियों, बालों और शरीर के सबसे ठोस भाग में तथा दांत में भी पानी उपस्थित है, दांत में पानी बहुत कम होता है।

ऊंट एक ऐसा जानवर है जो अपने पेट की थैली में इतना पानी एकत्र कर लेता है कि अगर उसे आठ दस दिनों तक पानी न भी मिले तब भी वह उस थैली से पनी पीकर जिन्दा रह सकता है और अगर पानी मिल जाता है तो वह पी भी लेता है और फिर से अपनी थैली में पानी एकत्र कर लेता है। पानी जीरो डिग्री सेंटीग्रेट पर जम जाता है। १०० भाग पानी जम कर १०९ भाग बर्फ बनाते हैं इसी लिए अगर बर्फ को पानी में डालें तो एक भाग बाहर रहता है और ९ भाग पानी के अन्दर रहती हैं।

पानी की मात्रा

पानी जहां मीठा होता है वहीं खारा और तेजाबी भी होता है इसके लिए एक माप दण्ड बनाया गया है जो कि पीएच माप दण्ड कहलाता है, यह एक से चौदह तक होता है अगर यह गिन्ती ७ हुई तो पानी न खारा होगा और न ही तेजाबी बल्कि सिर्फ पानी है। अगर यह गिन्ती ७ से ज्यादा हुई तो फिर यह पानी खारा होगा और अगर कम है तो पानी तेजाबी होगा, और अगर पानी का यही रूप हमारे शरीर में पाया जाए तो ऐसिडिटी के शिकार हो जाते हैं। और अगर यह ७ से ज्यादा हो जाती है तो शरीर में खारापन पैदा हो जाता है जिससे उल्टी भी आ सकती है। सामान्य भाषा में कहा भी जाता है कि यहां का पानी हमारे अनुसार नहीं है या हमारे अनुसार है।

ऐसे रूप में हमें खारा पन में तेजाबी और तेजाबी में खारी वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए।

पी०एच०की वस्तुएं –

१. क्लोरीन का तेजाब २. लेमू का तेजाब ३. सिरका या कोला ४. टमाटर या काली काफी ५. सामान्य पानी या शुरूआती बारिश का पानी ६. हमारा थूक या मूत्र ७. शुद्ध पानी आंसू या खून ८. समुन्दर का पानी ९. खमीरा या खाने वाला सोडा १०. खारी झीलों का पानी ११. अमोनिया १२. ब्लीचिंग पाउडर या सजी मिट्टी, ऊसर वाली मिट्टी १३. सफाई का साबुन या रीठा १४. कपड़े धोने वाला तेज साबुन।

आज जब विश्व की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है और जलप्रदूषण पर कन्ट्रोल करने का प्रयास नही किया जा रहा है। मानव को भय है कि उसके शरीर का ७१ प्रतिशत भाग पानी कहीं कम न हो जाए और उसकी कहीं मृत्यु न हो जाए।

इस अवस्था में अनिवार्य है कि पानी के अनुचित उपयोग को रोका जाए, शुद्ध पनी से शुद्ध कार्य और कम शुद्ध पानी से दूसरे कार्य किये जाएं। धरती से आवश्यकतानुसारा पानी निकाला जाए तथा शरीर में पानी की कमी न होने देंतथा पीने के लिए शुद्ध पानी ही का प्रोग करना चाहिए।

(अनुवाद : अब्दुर्रहीम सिद्दीकी आग के शुक्रिये के सथ)

परदा सभ्य समाज का

एक आवश्यक अंग है

मुहम्मद हसन सुल्तान कुरैशी

"और ईमान वाली स्त्रियों से कह दो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपने श्रृंगार की रक्षा करें। और अपने श्रृंगार प्रकट न करें, सिवाय उसके जो उन में खुला रहा है। और अपने सीनों (वक्ष स्थल) पर अपने दुपट्टे डाले रहें और अपने श्रृंगार किसी पर जाहिर न करें। और स्त्रियां अपने पांव धरती पर मारकर न चलें कि अपना जो श्रृंगार छिपा रखा हो, वह मालूम हो जाए। ऐ ईमान वालो! तुम सब मिलकर अल्लाह से तौबा करो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो।" (कुरआन, २४:३१)

'ऐ नबी ! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और ईमान वाली स्त्रियों से कह दो कि वे अपने ऊपर अपनी चादरों का कुछ हिस्सा लटका लिया करें।" (कुरआन, ३३:५६)

कुरआन मजीद की ऐसी स्पष्ट आयतों और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की सैकड़ों हदीसों, जिनमें परदे के अहकाम तफसील से बताये गये हैं कि मौजूदगी में शबाना आजमी और असगर वजाहत सरीखे लोगों का यह कहना कि कुरआन मजीद में परदे का बयान नहीं है, कोई अर्थ नहीं रखता। यह तो केवल यह साबित करता है कि संभवतः उन्होंने कुरआन का अध्ययन नहीं किया।

असल में जिस तरह सलमान रूश्दी, तस्लीमा नसरीन, अनवर शैख आदि इस्लाम और मुसलमान के खिलाफ जहर उगलते रहते हैं। उसी तरह शबाना आजमी और असगर वजाहत ने परदा के खिलाफ लिखने–बोलने का बीड़ा उठा लिया है। लगता है कि वे ब्रिटेन के पूव विदेश मंत्री जैकस्ट्रा के उस ऐलान से अधिक प्रभावित हो गये हैं जिसमें उन्होंने कहा था कि "मुस्लिम औरतें बुर्का उतार दें।"

जैकस्ट्रा ने मुस्लिम औरतों के लिए तो ऐलान कर दिया। मगर क्या वे ईसाइयों को भी यह सुझाव दे सकते हैं कि ईसाई सलीब उतार दें।

सारी दुनिया की औरतें, जो परदा करती हैं वे अपने आपको गौरवान्वित महसूस करती हैं। सारी दुनिया की सभ्य कौमें परदानशीन औरतों को इज्जत की निगाह से देखती हैं। आज के इस युग में भी मुसलमानों के अलावा दूसरे धर्मों की औरतों की एक बड़ी संख्या मौजूद है जो बाकायदा घूंघट डालती हैं। वे अपना चेहरा छुपाये रहती हैं और हाथों में दस्ताने लगाये रखती हैं। जैनी, मारवाड़ी, ब्राह्मण और सिख समाज की अधिकांश महिलाएं सभ्य तरीके से पूरा लिबास पहनती हैं और सड़कों में बेहयाई के साथ आधे–अधूरे कपड़े पहनकर नहीं चलती हैं। सभ्य समाज के लोग हमेंशा सभ्यता के साथ सारे कार्य करते हैं।

हिजाब का विरोध करने वाले भी अच्छी तरह जानते हैं कि विश्व स्तर पर परदे का रिवाज बढ़ रहा है और औरतें अपने आपको सुरक्षित, गौरवान्वित और इज्जतदार समझती हैं। स्वयं असगर वजाहत साहब अपने एक आलेख में यह स्वीकार करते हैं कि 'हिजाब की पुरानी पीढ़ी से अधिक नयी पीढ़ी अपना रही है। (कान्ति के शुक्रिये के साथ)

●●●

(पृष्ठ ३३ का शेष)

प्रस्ताव का विरोध किया है। मुसलमान मदरसों व मकतबों (प्राथमिक विद्यालयों) को बढ़ावा दें और उनको उन्नति दें और दोसतीनुमा दुश्मनी से अपनी शिक्षा संस्थाओं को बचाएं अन्यथा सहायता के नाम पर धीरे–धीरे मदरसों के निजाम (प्रबन्ध) में दखल देने का रास्ता खुल जाएगा और उसके नुक्सानात गम्भीर होंगे। इसीलिए मदरसों के जिम्मेदारों और अध्यापकों का कर्तव्य है कि वह इन संस्थाओं को दूसरों के सहयोग से आजाद रखें। हर कीमत पर अपनी सफों में एकता बनाए रखना, अपने कौल व अमल के जरिये सही इस्लामी तस्वीर पेश करना अपने सामूहिक फैसलों में नीति व उपाय के पहलुओं को ध्यान में रखना, अनुचित उत्तेजना से अपने आप को बचाना और दीनी संस्थानों को सुदृढ़ बनाना और मौजूदा परिस्थिति में पूरे संसार के मुसलमानों और खास तौर से भारतीय मुसलमानों की जिम्मेदारी है। इसके बिना हम इन साजिशों को नाकाम नहीं बना सकेंगे जिस के जाल हमारे चारों तरफ बनाए जा रहे हैं।

अनुवाद– हबीबुल्लाह आजमी
(तामीरे हयात से साभार)

पैरों में सूजन

समस्या गंभीर भी हो सकती है

डॉ. के.के. पांडेय

आप के पैर में बराबर सूजन बनी रहती है, सूजन दिन भर चलने के बाद शाम को किसी एक पैर या फिर दोनों पैरों में उभर आती है, कुछ साल पहले अचानक किसी एक पैर में सूजन आई थी जो अभी तक गई नहीं है और चलने के बाद ज्यादा बढ़ भी जाती है, सूजन के साथ ही पैरों में लाल व नीले निशान भी हैं, तो इन सब तकलीफों के रहते हाथ पर हाथ धर कर मत बैठिए बल्कि किसी वैस्कुलर या कार्डियो वैस्कुलर सर्जन से सलाह लीजिए, अन्यथा समस्या गंभीर हो सकती है।

पैरों में सूजन क्यों आती है

पैरों में सूजन आने के अनेक कारण हैं, इन में प्रमुख थ्राम्बोटिक सिन्ड्रोम नाम शिराओं यानी वेन्स का रोग है जिस में टांगों की शिराओं में स्थायी रूप से खून के कतरे जमा हो जाते हैं जो पैर व टांगों के ड्रेनेज सिस्टम को प्रभावित करते हैं जिस के चलते पैरों की शिराओं में खून का निरंतर प्रवाह नहीं रह पाता है, यहां से, एक के बाद एक पैरों में तकलीफों का पिटारा खुलना शुरू होता है। अतः समय रहते किसी वैस्कुलर या कार्डियो वैस्कुलर सर्जन से सलाह कर के इलाज शुरू कर देना चाहिए।

पैरों में सूजन का एक और कारण लिम्फीडिमा है। संक्रमण, पुरानी चोट या कैंसर की वजह से टांगों में पाया जाने वाला लिम्फैटिक चैनल काम करना बंद कर देता है। कभी–कभी जांघ या पेट के आपरेशन के बाद तो कई बार बिजली की सिंकाई के बाद भी पैर में सूजन उभर आती है। लिम्फैटिक चैनल में संक्रमण का सब से खास कारण अपने देश में फाइलेरिया है।

शरीर में २ तरह के तरल पदार्थ होते हैं, एक रक्त व दूसरा लिम्फ, जो प्रोटीन से भरपूर होता है। रक्त के संचालन में धमनियों व शिराओं का रोल होता है पर लिम्फ के प्रवाह में लिम्फेटिक नली की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

रक्त टांगों को आक्सीजन पहुंचाने का एकमात्र जरिया है तो लिम्फ टांगों को संक्रमण से बचाने का काम करता है और गैरजरूरी पानी को पैर के सिस्टम से निकालता रहता है। जब लिम्फ को ले जाने वाली नलियों में रूकावट आती है तो लिम्फ का पैरों में जमा होना शुरू हो जाता है जिस की वजह से सूजन आ जाती है।

तीसरा सी.वी.आई. नामक रोग है, जिस में आक्सीजन रहित गंदे खून के पैरों से फेफड़े की ओर वापस ले जाने की क्रिया शिथिल हो जाती है और पैर व टांगों में गंदा खून जमा होने लगता है जो पैर में सूजन का एक महत्वपूर्ण कारण बन जाता है। आजकल यह समस्या जोरों से व्याप्त है। घंटों कंप्यूटर के सामने पैर लटका कर बैठे रहना, सीवीआई की समस्या को जन्म दे रहा है। इन के अलावा गुर्दे का रोग, दिल का रोग व शरीर में प्रोटीन की कमी से भी यह समस्या उत्पन्न होती है।

कभी–कभी थायराइड रोग में भी टांगों की सूजन रहती है। कुछ दवाइयों के सेवन सेभी टांग व पैरों में सूजन उभर आती है, जैसे ब्लड प्रेशर में प्रयुक्त होने वाली औषधियां (निफेडिपीन, मिथाइलडोपा इत्यादि) दर्द व सूजन में प्रयुक्त दवा फिलाइल ब्यूटाजोन तथा कुछ मानसिक रोग उपाचर में प्रयुक्त दवाइयां (एम.ए.ओ.)

पैरों की सूजन की जांच के लिए आप हमेशा ऐसे अस्पताल में जाएं जहां आधुनिक जांचों की सुविधाएं उपलब्ध हों, अस्पताल में जाने से पहले यह जान लें कि वहां स्थायी रूप से कोई वैस्कुलर या कार्डियो वैस्कुलर सर्जन उपलब्ध है भी या नहीं। कभी–कभी इकोकार्डियोग्राम, टांग का सीटी व उभरी दर्द गांठ की एम.आर. आई. जैसी जांचों की भी जरूरत पड़ती है।

ज्यादातर पैर की सूजन के मरीजों में आपरेशन की जरूरत नहीं पड़ती है। दवा कुछ खास तरह के व्यायाम व अन्य विधाओं जैसे इंटरमिटेंट न्यूमेंटिक कांग्रेशन की मदद से सूजन की समस्या से निबटा जाता है। कभी–कभी वेन्स बाइपास सर्जरी, डिबल्किंग आपरेशन, लिम्फैटिक चैनल सर्जरी का सहारा लिया जाता है।

पैरों की सूजन से परेशान क्या करें ?

अपनी टांग व कमर के चारों ओर कसे हुए कपड़े न पहनें, टाइट

अंडरवियर व पेटी पहनने से बचें।

ऊंची एड़ी के जूते व सैंडल का इस्तेमाल कतई न करें। नीची एड़ी वाले जूते टांगों की मांसपेशियों को हमेशा क्रियाशील रखते हैं।

जौंगिंग, एरोबिक्स या ऐसा कोई उछलकूद वाला व्यायाम जिस में पैर के घुटने पर बराबर झटके लगें, कतई न करें। इस तरह के व्यायाम पैर में सूजन को बढ़ा देते हैं।

ऐसे काम व शारीरिक मुद्रा से बचें जिन में लंबे समय तक बैठना या खड़े रहना पड़ता हो। ऐसा होने से पैरों से खून व लिम्फ के वापस होने या ऊपर चढ़ने की क्रिया बाधित हो जाती है। यह अवस्था पैरों के लिए नुकसानदेह है।

खाने में तेल व घी का प्रयोग कम मात्रा में करें। कम कैलोरी वाले और रेशेदार खाद्य पदार्थ फायदेमंद हैं।

अपने वजन पर नियंत्रण रखें। वजन कम करने से शिराओं व लिम्फैटिक चैनल पर पड़ने वाला बेवजह का दबाव कम हो जाता है। किसी भी हालत में मोटापे को न पनपने दें।

गर्भनिरोधक दवाओं का प्रयोग न करें क्योंकि ये दवाएं वेन्स की दीवारों की चौड़ाई को बढ़ा देती हैं।

रोज सुबह के समय सैर करें। टहलना इनसान के लिए सबसे अच्छा व्यायाम है। इस से रक्त व लिम्फ का पैरों से ऊपर की ओर जाने का प्रवाह तेज होता है।

कोई भी व्यायाम, जिस में पैरों को कुछ समय के लिए ऊपर रखना पड़े, बेहद लाभकारी होता है। पर ऐसे व्यायाम अपने चिकित्सक की सलाह से ही करें।

अपने घर में जमीन पर लेट कर अपने पुट्ठों को दीवार से सटा कर दोनों पैरों को दीवार के सहारे १० मिनट तक ऊपर की ओर रखें। ऐसा करने से पैरों को तुरंत आराम मिलेगा।

अपने आफिस में १घंटे से ज्यादा लगातार न ही खड़े रहें और न ही पैर लटका कर बैठे रहें। इस तरह एक घंटा पूरा होने पर ५ मिनट पैरों को आराम जरूर दें।

रात में सोते समय पैरों के नीचे १ या २ तकिए लगाएं जिस से पैर छाती से १० या १२ इंच ऊपर रहें। ऐसा करने से पैरों में आक्सीजन रहित खून व लिम्फ के जमा होने की प्रक्रिया शिथिल पड़ जाती है।

हमेशा सुबह बिस्तर से उठते ही क्रमित दबाव वाली जुराबें (स्टौकिंग) पहनें। ये विशेष जुराबें पैरों में खून व लिम्फ का प्रवाह बढ़ाती हैं।

अगर आप की सांस अचानक फूलने लगे या बैठे–बैठे जी घबराने लगे तो तुरंत किसी चिकित्सक से संपर्क करें या किसी अस्पताल में जाएं।

(पृष्ठ २२ का शेष)

के किसी भी संभावना से साफ तौर से इन्कार करते हुए कहा कि ऐसे सभी केन्द्रों को शक की निगाह से नहीं देखा जाना चाहिए। इससे पूर्व इसी माह में उत्तर प्रदेश के पूर्व डी.जी. पीआरके पंडित ने कानपुर में कानपुर रेंज की मीटिंग में कहा कि मदरसों पर किसी किस्म का कोई शक नहीं।

मदरसों की स्वच्छ छवि को धूमिल करने की कोशिश सफल न होगी। इतिहास साक्षी है कि मदरसों के लोगों ने भारत की आजादी की लड़ाई में अग्रिम पंक्ति में भाग लिया है और देश के बंटवारे का विरोध किया है। (कान्ति के शुक्रिये के साथ)

●●●

ब्रिटिश मुसलमानों की नयी नस्ल

पता नहीं यह यान्ना रिडले की अपील का प्रभाव है या ब्रिटिश के मुस्लिम नवयुवकों का अपना विवेक कि ब्रिटिश मुसलमानों की नयी नस्ल का कम से कम ४० प्रतिशत भाग अपने दिन–प्रतिदिन के जीवन में इस्लामी शरीअत पर अमल करना चाहता है। वह अपनी इस्लामी पहचान की सुरक्षा का इच्छुक है। दूसरी ओर ५० वर्ष से अधिक आयु वाले मुसलमानों में से मात्र १७ प्रतिशत यह भावना रखते हैं। येरुशलम पोस्ट डाट काम के रिपोर्टर ने एक ताजा रिपोर्ट सर्वे के हवाले से आंकड़े प्रस्तुत कर यह बताया कि कुछ वर्ष पूर्व तक ब्रिटिश मुसलमानों की नयी नस्ल इस्लामी पहचान से अनभिज्ञ थी। पुरानी नस्ल तो मुसलमानों में इस्लाम के विषय में बड़ा जोश पाया जाता है। यह सर्वे ब्रिटिश विदेश नीति की एक संस्था "पालिसी एक्सचेंज" ने कराया है और येरुशलम पोस्ट डाट काम के रिपोर्टर जान पॉल ने उसे गत ३० जनवरी को इंटरनेट पर जारी किया है। ८४ प्रतिशत मुसलमानों का कहना है कि ब्रिटेन में उनके लिए हालात उतने बुरे नहीं हैं, जितना की मीडिया बता रहा है।

कितने हितकारी मदरसे ?

जमील अहमद खां रायबरेलवी

भारत में बाल मजदूरों की संख्या ढाई करोड़ से भी अधिक हो चुकी है। आजादी के समय यह संख्या बीस लाख थी। बाल मजदूरों की बढ़ती संख्या का कारण देश की जनसंख्या के बड़े हिस्से का अशिक्षित होना है। इन ढाई करोड़ बाल श्रमिकों को दस से बारह घंटे कड़ी मेहनत के बाद भी भरपेट भोजन नसीब नहीं होता। इतनी दुखभरी जिन्दगी बिता रहे इन बच्चों का बचपन मजदूरी के बोझ तले सिसकने को मजबूर है। इन बच्चों के कल्याण हेतु सरकार की योजनाएं कोई कारगर साबित नहीं हो रही हैं। अनेक योजनाएं तो केवल कागजों पर ही रह जाती हैं और भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती हैं। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि अपने देश में भ्रष्टाचार सभी सीमाओं को पार कर चुका है। स्वयं सेवी संस्थाएं भी इस ओर कोई उल्लेखनीय सफलता नहीं प्राप्त कर रही हैं। ये संस्थाएं भी भ्रष्टाचार की शिकार हो जाती हैं। अभी हाल ही में उच्चतम न्यायालय ने भारत सरकार से कहा है कि प्रधान मंत्री व वित्त मंत्री को अपने व्यस्त कार्यक्रम में से बाल कल्याण योजना को अन्तिम रूप देने का समय निकालना चाहिए।

योजनाएं बनती भी हैं तो ठंडे बस्ते में डाल दी जाती हैं। यदि कुछ लागू भी होती हैं तो भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती हैं, फलतः परिणाम नकारात्मक होते हैं। समस्या और भयानक रूप धारण करती हैं। केन्द्र व राज्य सरकारों सहित स्वयं सेवी संगठन जो समाज का उत्थान करने की बात करते हैं सबसे पहले इन बच्चों को जीने का अधिकार प्रदान करें।

हां, इस दिशा में एक प्रकाश–पुंज नजर आता है और वह है भारत में स्थापित मदरसे जिनकी संख्या समूचे देश में एक अनुमान के अनुसार ५० हजार होगी। प्रस्तुत लेख में केवल भारतीय मदरसों की ही चर्चा होगी। ये मदरसे गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रहे परिवार से अनुमान के अनुसार लगभग चार लाख बच्चे जिनमें अनाथ बच्चे भी शामिल हैं चयनित कर लेते हैं तत्पश्चात् इन बच्चों की शिक्षा–दीक्षा का प्रबन्ध करते हैं।

इनके रहने के लिए छात्रावास का प्रबन्ध करते हैं। दो समय भोजन व नाश्ते की भी व्यवस्था करते हैं। पहनने के लिए इस्लामी रीति–रिवाज के हिसाब से कपड़ों का भी प्रबन्ध करते हैं, सोने के लिए मौसम के अनुसार बिस्तर भी प्रदान करते हैं, सफाई सुथराई का भी इन्तिजाम किया जाता है। स्वास्थ्य के लिए दवा इलाज की भी व्यवस्था रखी जाती है। शाम के समय क्रीड़ा का भी समय दिया जाता है। ध्यान रहे कि मदरसों में श्रम नहीं कराया जाता। शारीरिक सफाई व वस्त्रों सहित स्वच्छ रहने का प्रशिक्षण दिया जाता है। सारांश यह कि मदरसों के ये गरीब व अनाथ बच्चे सहपाठियों के साथ पूर्ण रूप से पारिवारिक जीवन का आनन्द उठाते हैं। कुछ मदरसों में बड़े बच्चों को कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। ये हंसते–खेलते साफ–सुथरे बच्चे किसी भी मदरसे में जाकर देखे जा सकते हैं।

ऊपर वर्णित सारी सेवाएं निःशुल्क होती हैं। शिक्षा के साथ–साथ इन बच्चों के चरित्र–निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। समता, समानता जो इस्लाम का विशेष गुण है को ध्यान में रखते हुए बच्चों के साथ समान व्यवहार किया जाता है, किसी प्रकार का भेदभाव नही बरता जाता। चरित्रवान सन्तोषी, प्रकृति के शिक्षक (मौलवी) यहां शिक्षण–काय्र करते हैं। उर्दू और अरबी भाषा के साथ इस्लामी शिक्षा ही माध्यम होती है। कुछ मदरसों में हिन्दी, अग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल व विज्ञान की भी शिक्षा दी जाती है। बड़े मदरसों में अन्य विषय भी पढ़ाये जाते हैं।

मदरसे बन्दों का ताल्लुक पालनहार से जोड़ने का कार्य करते हैं जो इन्सानीं जिन्दगी का मकसद है। इस प्रकार मदरसों में पढ़े छात्रों में सेवा–भाव, स्वावलम्बन, इन्सानियत, ईमानदारी, आत्मसन्तोष, मृदभाषी, इस्लामी तरीके से जिन्दगी गुजारने के गुण प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। समाज में इनको इज्जत मिलती है। हिन्दू, मुसलमान और अन्य देशवासी सब इनको मौलाना साहब, मौलवी साहब कहकर सम्बोधित करते हैं।

इस प्रकार ये मदरसे खामोशी से देश की एक बड़ी सेवा कर रहे हैं इसकी जानकारी बहुत कम लोगों को है। गरीबी की रेखा से नीचे के चार

लाख परिवारों के बच्चों को बाल–श्रमिक बनने, खेत–खलिहानों, कारखानों, होटलों, रेस्टोरेंटों, चाय की दुकानों आदि जगहों में १० से १२ घंटे सख्त मेहनत करने, अपमानित व अभावग्रस्त जीवन जीने से ये मदरसे बचाकर एक शिक्षित, योग्य, इज्जतदार अच्छा नागरिक बना देते हैं? मदरसों से फारिग बेकार नहीं रहते हैं और न ही बेकारी के कारण आत्महत्या करते हैं। बहुधा बाल मजदूर बच्चे भ्रष्ट व जरायम पेशा व्यक्तियों का शिकार हो जाते हैं मुजरिम बन जाते हैं।बहुतों से भीख मांगने का पेशा कराया जाता है। जेब कतरने, चोरी करने व नशीली चीजों के आदी हो जाते हैं।

अब आप ही सोचिए ये मदरसे कितनी बड़ी सेवा थोड़े से धन से अंजाम दे रहे हैं। गरीबी रेखा से कुछ ऊपर के परिवारों के लाखों बच्चे भी मदरसों में तालीम हासिल करते हैं। इनसे नाम मात्र का शुल्क लिया जाता है। मदारिस इस्लामिया विज्ञान की उच्च शिक्षा में रोड़ा नहीं बनते। ये तो गरीब बेसहारा बच्चों को सहारा देते हैं और इस्लामी शिक्षा का प्रसार करके मानवता की सेवा करते हैं। मदरसों से निकले हुए छात्र उच्च विद्यालयों में भी प्रवेश करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में मुसलमानों का योगदान कम नहीं है। देश भर में ६० महाविद्यालय मुसलमानों द्वारा संचालित है, जिनमें आधी से ज्यादा संख्या गैर मुस्लिम छात्रों की है।

कालेजों व मदरसों के छात्रावासों की यदि तुलना करें तो पता चलता है कि कालेज, यूनीवर्सिटी होस्टलों में पान मसाला, सिगरेट व अन्य नशीले पदार्थ शराब आदि का प्रयोग धड़ल्ले से होता है। वहां कट्टे और बम भी पाये गये हैं। गुंडों व जरायम पेशा नौजवानों का आना जाना रहता है। औरतबाजी और अन्य आधुनिक बुराइयां भी धड़ल्ले से अंजाम दी जाती हैं, जबकि मदरसों के छात्रावासों में ऐसा कुछ नहीं पाया जाता है। वहां पाक–साफ माहौल होता है।

यह स्वाभाविक है कि आपके मन में यह प्रश्न उठेगा कि इन मदरसों का वित्त पोषण कैसे और कहां से होता है ? मदरसों के खर्च की भरपाई मुसलमानों द्वारा ही होती है। इसके लिए जकात, इमदाद, सदकात, खैरात मुसलमानों से प्राप्त होता है। रमजान के महीने में मुसलमान जकात देते हैं। मदरसों से निर्धारित लोग पैसा लेने के लिए देश भर में जाते हैं। रसीदों के द्वारा निर्धारित बजट के हिसाब से धन इकट्ठा करते हैं।

मदरसों में शिक्षकों को कम से कम एक हजार रूपया और अधिक से अधिक ५ हजार रूपया वेतन मिलता है। प्रधानाचार्य को ५ से ६ हजार रूपया अधिक वेतन नही मिलता। जबकि उत्तर प्रदेश के प्राइमरी शिक्षक को ८ से ६ हजार मासिक वेतन मिलता हैऔर शिक्षा का सतर इतना गिर गया है कि गरीब आदमी भी सरकारी प्राइमरी पाठशाला में अपने बच्चे को भेजना पसन्द नहीं करता।

इसके विपरीत संघ परिवार के सरस्वती शिशु मन्दिरों, विद्या मन्दिरों की संख्या हजारों में है। किन्तु इनमें शिक्षा महंगी है। एक विद्यार्थी पर हजारों रूपया वार्षिक खर्चा आता है। गरीब परिवार तो अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने की बात सोच भी नहीं सकते। जिस व्यक्ति की आय १० हजार रूपये मासिक से कम है वह इन स्कूलों में शिक्षा का खर्च बर्दाश्त नहीं कर सकता। सम्पन्न परिवारों को भी बच्चों के प्रवेश के लिए बड़ी कोशिश करनी पड़ती है।

ईसाई मिशनरीज के कान्वेन्ट व कालेजों में तो शिक्षा उपरोक्त से भी महंगी है। उच्च वर्ग ही अपने बच्चों की एड़ी–चोटी का जोर लगाकर ही प्रवेश दिला पाता है। हजारों रूपये चन्दे के रूप में वसूला जाता है। शिक्षा व्यापार की श्रेणी में आ गयी है। सेवा भाव तो किसी में रहा नहीं। ये मदरसे ही हैं, जो शिक्षा, दीक्षा, भोजन, वस्त्र, छात्रावास, दवा इलाज, सब निःशुल्क प्रदान करते हैं।

किन्तु कुछ इस्लाम दुश्मन शक्तियां मदरसों व मस्जिदों के खिलाफ एक सोची–समझी साजिश के अन्तर्गत भ्रामक प्रचार में लगी हुई है। दरअसल वे इस्लाम की शिक्षा को ही रोकने का प्रयास कर रही है। मदरसों के चरित्र को संदिग्ध बनाने और उनकी छवि को जनता की नजरों में खराब करने के लिए इनका रिश्ता आतंकवाद से जोड़ने के लिए घिनौनी कोशिश की जा रही है। मदारिस इस्लामिया को बगैर किसी प्रमाण के संदेह के आधार साजिशों के घेरे में लाया जा रहा है। जबकि भारत के किसी मदरसे में आज तक कोई ऐसी मिसाल नहीं मिल सकी है, जिसके आधार पर उन्हें आतंकवाद में सम्मिलित समझा जाए या शक के घेरे में लाया जाए। जनवरी माह में सहारनपुर की एक सभा में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह ने मस्जिदों व मदरसों पर प्रतिबंध लगाने

(शेष पृष्ठ २० पर)

सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह़०)

यह लेख तबक़ाते ह़नाबिला से लिया गया है

अनुवाद : अ़ब्दुर्रशीद नदवी राजस्थानी

अब्दुल कादिर बिन अबी सालेह बिन अब्दुल्लाह बिन यहया जाहिद बिन मुहम्मद दाऊद बिन मूसा बिन अब्दुल्लाह बिन मूसा जून बिन अब्दुल्लाह बिन हसन मुसन्ना बिन अली बिन अबी तालिब।

अपने जमाने के शैख, आरिफीन के रहनुमा, मशाइख़ के सुल्तान अपने वक्त के अहले तरीक (सूफिया) के सरदार मुहीयुद्दीन अबू मुहम्मद, बुलन्द दरजात वाले, कश्फ व करामात वाले, उलूम व मआरिफ वाले अपने हालात में बड़ी शुहरत रखने वाले थे।

४६० हिज्री या ४६१ हिज्री में गीलान जीलान। में पैदा हुए, जवान हुए तो बगदाद तशरीफ ले गये। (जाहिर है इब्तिदाई तअ़लीम जीलान में हुई) बगदाद में अबू गालिब बिन बाकल्लानी, जअफर सिराज, अबू बक्र बिन सौसन, इब्नि बयान, अबू तालिब बिन यूसुफ, इब्नि खशीश और अबू जैबी से हदीस का इल्म हासिल किया, जब कि फिक्ह का इल्म काजी अबू सअद मखरामी और अबू खत्ताब कुलूजानी से हासिल किया।

कहा जाता है कि आप ने अली बिन अकील और काजी इब्ने हुसैन से इल्म हासिल कर के अपने मजहब, में इल्मे उसूल और इल्मे खिलाफ में महारत (निपुणता) हासिल की। अदब (साहित्य) का इल्म आप ने अली जकरीया तबरेजी से हासिल किया और शैख हम्माद दब्बास जाहिद की सुहबत में रहे और अपने शैख मखरमी के मदरसे में तअलीम हासिल की फिर वहीं कियाम किया यहां तक कि वहीं उनकी वफात हुई और वहीं दफन हुए।

इब्ने जौजी कहते हैं कि यह मदरसा छोटा सा था जो शैख अब्दुल कादिर के हवाले कर दिया गया, पस उन्होंने लोगों में वअ़ज़ कहना शुरू किया – तो उनके जुहद की शोहरत हुई आपका एक वकार था आप के मिजाज में खामोशी और संजीदगी थी थोड़े ही दिनों में मदरसा लोगों की कसरत की वजह से तंग हो गया।

आप बगदाद की फसील के पास लोगों की इसलाह के लिए बैठते थे बड़ी तादाद में लोग तौबा करते थे। इस तरह मदरसा आबाद हुआ और उसमें तौसीअ और इजाफा किया गया अपनी वफात तक इस मदरसे में आप मुकीम रहे।

इब्निुस्समआनी कहते है – शेख अपने जमाने में हनाबिला के इमाम और उनके शैख, फकीह, नेक दीनदार हमेशा जाकिर व शागिल रहने वाले बहुत जल्द अश्कबार हो जाने वाले मैंने आपसे इल्म लिखा है। वह बाबुल अज़्ज में रहते थे उस मदरसे में जो आपके लिए बनाया गया था मैं ने अबुल हुसैन इब्निुत्तब्बान बगदादी को कहते हुए सुना है कि अब्दुल कादिर जीलानी का मदरसा काजी मुखरमी का था जब उसकी जिम्मेदारी शेख अब्दुल कादिर को दी गयी आपने उसकी तामीर व तौसीअ का इरादा फरमाया तो आप के पास मर्द और औरतें आतीं और सब थोड़ा थोड़ा चन्दा देते इस तरह उसकी तामीर का काम मुकम्मल हुआ। एक वाकिया यह पेश आया कि एक गरीब औरत अपने शौहर के साथ आई। और शेख अब्दुल कादिर से कहने लगी यह मेरे शौहर हैं इनके जिम्मे मेरे महर के तकरीबन बीस दीनार हैं आधा मेहर मैं इस शर्त पर इनको हिबा करती हूं कि यह बाकी आधे मेहर के बदले में आपके मदरसे में खिदमत करें। हम दोनों इस पर राजी हैं। शौहर भी इस पर तैयार हो गए औरत ने सुलहनामा लिख कर शेख के हवाले कर दिया। इस तरह वह शख्स इनके मदरसे में काम करते थे। शेख उनकी रिआयत करते एक दिन उनको उजरत देते और एक दिन नहीं जब शेख ने अन्दाजा कर लिया कि इस ने पांच दीनार के बराबर खिदमत कर ली तो वह तहरीर उनको दे दी और फरमाया बाकी मैंने माफ कर दिये।

शेख अब्दुल कादिर ने लोगों की इस्लाह, और वअज़ का काम सन् ५२० हिजरी के बाद शुरूअ किया और आपको लोगों में आम मकबूलियत हासिल हुई और लोग आपकी दीनदारी नेकी और परहेजगारी के काइल हो गए और आपसे अहले सुन्नत को तकवियत व तायीद हासिल हुई आपके हालात, अकबाल और कश्फ व करामात की शुहरत हो गई, और बादशाह व

सलातीन और अमीर व वजीर भी आपसे मर्ऊब होते थे।

अल–मुन्नी के लेखक शेख मुवफ्फकुउद्दीन कहते हैं : मैंने किसी शख्स की इतनी करामात नहीं सुनी जितनी शेख अब्दुल कादिर के बारे में बयान की जाती है। और किसी की भी दीन की वजह से इतनी ताजीम होते हुए नहीं देखी जितनी शेख की देखी।

शेख इज्जुद्दीन इब्ने अब्दुस्सलाम शाफई फरमाते हैं कि किसी भी शेख की करामात तवातुर के साथ साबित नहीं सिवाए शैख अब्दुल कादिर के कि वह तवातुर से साबित है।

अहमद इब्ने मुतीअ कहते हैं मैं वजीर इब्ने हुरैरा के मदरसे से आता था और शैख अब्दुल कादिर से इस्तिफादा करता। एक दिन मैं आपके पास आया शायद उस वक्त आपका मिजाज ठीक नहीं था उकताहट थी तो आपने मुझे डांट दिया और फरमाया अभी चले जाओ तो मैं आ गया, मैं अभी रास्ते ही में था आपने मुझे बुलवाया मैं वापस गया तो फरमाया की अभी मैं तुम पर नाराज हो गया था और तुम्हारे जाने के बाद मैं सो गया ख्वाब में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जियारत हुई तो आपने फरमाया तुम खैर की बातें सिखाने वाले हो तुम खैर सिखाने वाले हो तुम खैर सिखाने वाले हो। उकताओ नहीं। फिर आपने मुझे बिठा लिया और पढ़ाया। शैख अब्दुल कादिर की अपने जमाने में बड़ी इज्जत थी और एहतिराम था वक्त के तमाम मशाइख सूफिया उलमा आपका एहतिराम करते थे आपके बड़े कमालात और करामात हैं।

लेकिन कारी अबुल हसन मिसरी ने शैख अब्दुल कादिर के हालात व वाकिआत में तीन जिल्दों में एक किताब लिखी है। और उसमें हर तरह की रत्ब व याबिस (अनर्थ) और कमजोर व ताकतवर बातें और रिवायात बयान की है। और आदमी के झूटा होने के लिए यही काफी है कि वह हर सुनी हुई बात बयान करे। मैंने इस किताब का एक हिस्सा पढ़ा लेकिन मुझे उस पर एतिबार नहीं है। और मुझे अच्छा नहीं लगता है कि मैं उसकी रिवायत नकल करूं हां मगर वो रिवायात जो दूसरी किताबों में भी मन्कूल हैं बयान की जा सकती हैं। क्योंकि इस किताब में गैर मारूफ लोगों से बातें नक्ल की गई हैं। और उसमें बातिल और बेबुनियाद किस्से बेशुमार हैं। जिनकी निस्बत शेख अब्दुल कादिर जीलानी की तरफ मुनासिब नहीं है। फिर मैंने कमाल जाफर की यह बात पढ़ी की इस किताब का मुसन्निफ खुद काबिले एतिबार नहीं।

कुछ इस किताब की चुनिन्दा बातें जो हमको सही मालूम होती है बयान करता हूं। शैख मुवफ्फकुद्दीन इब्ने कुदामा फरमाते हैं। मैं सन् ५६१ हि० में बगदाद गया तो देखा की शैख अब्दुल कादिर की शख्सियत इल्म व अमल, फिक्ह व फतवा और माल व दौलत हर लिहाज से मरजअ है। और वो तालिबे इल्म के लिए काफी है। क्योंकि उन के पास हर तरह का इल्म जमा है। सब्र व तहम्मुल की सिफत भी आप रखते हैं। और आप बड़े बा रौब थे अल्लाह तआला ने आप के अन्दर अच्छी अच्छी खुसूसियात और सिफात जमा फरमा दी थीं मैंने आप के बाद आप जैसा बा कमाल नहीं देखा।

इस किताब में आप के लड़के शेख मूसा से एक किस्सा नक्ल किया गया है वो कहते हैं कि मैंने अपने वालिद से सुना है कि मैं एक बार जंगल में गया कई दिन गुजर गए पानी नहीं मिला और सख्त प्यास लगी तो देखा की एक बादल आया और मेरे ऊपर सायाफिगन हो गया और उससे मेरे ऊपर शबनम की तरह कोई चीज टपकी। जिस से मेरी प्यास बुझ गई फिर मैंने एक रोशनी देखी जो चारों तरफ फैल गई फिर एक सूरत जाहिर हुई जिससे यह आवाज आई ऐ अब्दुल कादिर मैं तेरा रब हूं मैंने तेरे लिये हराम चीजों हलाल कर दी हैं मैं ने कहा अऊजु बिल्लाहि मिनश शैतानिर्रजीम हट मलऊन जलील हो तो वो रोशनी तारीकी में बदल गई और सूरत गायब हो गई और फिर मुझ से कहा कि ऐ अब्दुल कादिर तुम अल्लाह के हुक्म से अपने इल्म की वजह से नजात पा गए मैंने इस तरह से सत्तर सूफिया को गुमराह कर दिया है। मैंने कहा कि अल्लाह ही का फजलो अहसान है। आप से पूछा गया कि आप ने कैसे जान लिया कि वो शैतान था फ़रमाया उसकी इस बात से की मैंने तुम्हारे लिए हराम चीजें हलाल कर दी हैं। यह हिकायत शैख अब्दुल कादिर के बारे में मशहूर है इसलिए इस सिलसिले में इस किताब के लेखक पर एतमाद नहीं है बल्कि दूसरों पर एअतिमाद है।

इस किताब में उनके दूसरे लड़के अब्दुर्रज्जाक से यह रिवायत है कि अजम से बगदाद एक फतवा आया कि एक शख्स ने तीन तलाक की कसम खाली है कि वह ऐसी इबादत करेगा जिस में वह उस वक्त पूरी दुनिया में

तन्हा हो और कोई शरीक ना हो वर्ना मेरी बीवी को तीन तलाक। तमाम उलमा पर यह फतवा पेश किया गया लेकिन किसी के भी जवाब समझ में नहीं आया फिर फतवा मेरे वालिद के पास लाया गया उन्होंने फौरन तहरीर फरमाया कि यह शख्स मक्का जाए और मताफ (तवाफ करने की जगह) खाली कर दी जाए और तन्हा यह तवाफ करे इस तरह इसकी कसम पूरी हो जाएगी।

शेख अब्दुल कादिर जीलानी रह० की यह बात की मेरा पैर हर वली की गरदन पर है यह बात इस मुसन्निफ ने कई सनदों से बयान की है। इस बात के सिलसिले में सबसे अच्छी बात वह है जो शेख अबू हफस सुहरवर्दी ने अपनी किताब अवारिफ में फरमाई की शेख का यह कौल मशाइख की उन बातों में से है जिनमें उनकी पैरवी नहीं की जाएगी लेकिन इससे उनके मर्तबे को नहीं घटाया जाएगा और हर शख्स की बातों में से कुछ काबिले कुबूल होंगी और कुछ काबिले रद सिवाय नबी–ए–मअसूम (सल्ल०) के शेख अब्दुल कादिर तौहीद और अल्लाह तआला की सिफात के बारे में अच्छा कलाम फरमाया है, उनकी एक किताब "गुनयतुत्तालिबीन" है जो बहुत मशहूर है एक किताब फुतूहुल गैब है। उनके शागिर्दों और मुरीदों ने उनकी मजलिसों के कलाम और वाअज को जमा कर दिया है। वो सिफाते बारीतआला और तकदीर के मसअले में सुन्नत पर कायम थे और मुखालिफीन की तरदीद करने वाले थे।

आपने अपनी किताब गुनिया में फरमाया :

अल्लाह तआला ऊपर की जिहत में है वह अर्श पर मुसतवी है बादशाहत उसके कब्जे में हैं उसका इल्म तमाम चीजों पर मुहीत है, उसी की तरफ अच्छी बातें जाती हैं और नेक अमल उनको पहुंचता है। (कुरआन) वही आसमान से जमीन तक हर अम्र की तदबीर फरमाता है। फिर उसी की जानिब हर मामला चढ़ कर जाएगा ऐसे में जिसकी मिकदार तुम्हारे शुमार किये हुए दिनों में से एक हजार साल के बराबर होगी।

इत्तिबा की सिफत की तावील नहीं की जायेगी। उसका अर्श पर होना हर नबी पर उतरने वाली किताब में मजकूर है लेकिन कैफियत बयान नहीं की गई है।

शैख आरिफ अली इब्ने इदरीस से रिवायत है कि उन्होंने शेख अब्दुल कादिर से पूंछा क्या अल्लाह का कोई वली ऐसा भी हुआ जो अहमद इब्ने हंबल (अहले सुन्नत के इमाम) के अकीदे के खिलाफ हो? फरमाया नहीं हुआ और नहीं होगा।

इब्ने नौमिया कहते हैं मुझे शेख अहमद इब्ने इब्राहीम फारूकी ने कहा कि इन्होंने शेख शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी साहिबे अवारिफ से सुना है फरमाते हैं मैं ने कुछ इल्मे कलाम पढ़ने का इरादा किया लेकिन मुझे तरद्दुद था की इमामुल हरमैन की "इरशाद" किताब पढ़ूं या शहरस्तानी की निहायतुल इकदाम पढ़ूं या और कोई दूसरी किताब, फिर मैं अपने मामू अबुन्नजीब के साथ गया वह शेख अब्दुल कादिर जीलानी के बगल में नमाज पढ़त थ कहते हैं शेख मेरी तरफ मुतवज्जह हुए और फरमाया ऐ उमर यह इल्म कब्र का तोशा नहीं है यह कब्र का तोशा नहीं है तो मैं ने यह इरादा छोड़ दिया।

शैख अब्दुल कादिर जीलानी रह० फरमाया करते थे कि मखलूक तुम्हारे लिए तुम्हारी जान से हिजाब है और तुम्हारी जान तुम्हारे लिए अल्लाह से हिजाब है जब तक मखलूक पर तुम्हारी नजर रहेगी जान को तुम नहीं पहचानोगे और जब तक तुम्हारी जान पर नजर रहेगी अल्लाह को नहीं पहचानोगे आप ने यह भी फरमाया कि या तो खालिक है या मखलूक अगर तुम खालिक को इतिख्यार करने हो तो हजरत इब्राहीम की तरह कह दो "फइन्नहुम अदुव्वुल्ली इल्ला रब्बल आलमीन" कि तुम्हारे सब खुदा मेरे दुश्मन हैं। सिर्फ मेरा माबूद तो रब्बुल आलमीन है फरमाया जिसने इसका मजा चख लिया उस ने अल्लाह को पहचान लिया किसी ने बीच में सवाल किया कि अगर किसी के मिजाज पर सफरा की तलखी गालिब हो वह इस मजे की मिठास कैसे पा सकता है जवाब इर्शाद फरमाया – अपने दिल से शहवतो को दूर कर दे आपने अपना एक वाकिया बयान फरमाया कि बगदाद में. मंहगाई के जमाने में एक बार मुझ पर फक्र आया कई दिनों तक खाना नहीं मिला इधर उधर गिरी पड़ी चीजें खा लेता था एक दिन भूक की शिद्दत में निकला रियाहीन बाजार में यासीन मस्जिद में पहुंचा कमजोरी हद से बढ़ गई थी गोया मर जाउंगा मस्जिद के एक गोशे में बैठ गया इतने में एक अजमी नौजवान आया उसके पास कुछ रोटियां और भुना हआ गोश्त था बैठ कर खाने लगा जब वह लुकमा उठाता तो मेरा दिल चाहता कि मुंह खोल दूं की भूख बड़ी जोर से लगी थी लेकिन

मैंने अपने नफस से कहा कि यह क्या कर रहे हो क्या अल्लाह पर भरोसा नही है। और अल्लाह ने मौत लिखी होगी तो मर जाएंगे कि वह शख्स मेरी तरफ मुतवज्जह हुआ और कहा आइए बिस्मिल्लाह कीजिए मैंने इन्कार किया उसने मुझे कसम दी मैंने फिर अपने नफस की मुखालफत की और इन्कार किया और उसने फिर कसम दी मैंने मजबूरन खाया वह मुझ से सवाल करने लगा तुम कौन हो? क्या काम करते हो? मैंने कहा मैं जीलान का रहने वाला एक फकीह हूं उसने कहा मैं भी जीलान ही का हूं फिर पूछा क्या तुम अब्दुल कादिर जीलानी जाहिद नौजवान को जानते हो मैं ने कहा मैं ही हूं वह बड़ा परेशान हुआ और उसके चहरे का रंग बदल गया और कहने लगा वल्लाह मैं बगदाद आया और उस वक्त मेरे पास गुजारे के लिए कुछ खर्चा बाकी था मैं तुम को तलाश करता रहा लेकिन किसी ने तुम्हारा पता नहीं बताया आखिर मेरा खर्च खत्म हो गया और आज तीन दिन हो गए गिजा का कोई इन्तिजाम नहीं हुआ यह मेरे पास तुम्हारी अमानत रखी हुई थी अब मैं इज़तिरार की हालत में हो गया था मुर्दा खाना भी मेरे लिए जायज हो गया इस लिए मैं तुम्हारी अमानत में से यह खरीद कर खाने लगा इस लिए तुम खुश होकर खाओ यह तुम्हारा ही है और मैं तुम्हारा मेहमान हूं जब कि अभी अभी तुम मेरे मेहमान थे मैंने उस से पूरा किस्सा पूंछा उस ने कहा तुम्हारी वालिदा ने आठ दीनार तुम्हारे लिए भेजे थे। अब मैं तुम से माअज़िरत करता हूं मैंने उसको तसल्ली दी और खुश किया और बचा हुआ खाना उसी को दे दिया उसने कबूल कर लिया और चला गया।

इब्नुल खश्शाब कहते हैं कि मैं इल्मे नहव पढ़ता था और शैख की मजलिस में भी आता था लेकिन मशगूली की वजह से पाबन्दी नहीं कर पाता था एक दिन उनके पास आया आप मेम्बर पर थे मैंने दिल में कहा आज मेरा सबक नहव छूट गया शैख ने फौरन फरमाया अरे तेरा भला हो। क्या तू जिक्र की मजिलस पर इल्मेनहव को तरजीह देता है हमारे साथ रह हम तुझे सीबवैह (नहव के इमाम का नाम है) बना देंगे इब्नुल जौजी कहते हैं शैख अब्दुल कादिर ने ८ रबीउल अव्वल सन् ५६१ हिजरी को मग्रिब के बाद ९० साल की उम्र थी आपने मदरसे में वफात पाई।

मैंने उनके बारे में सुना है कि मौत के वक्त फरमा रहे थे आहिस्ता। आहिस्ता। फिर कहने लगे व अलैकुमुस्सलाम व अलैकुमुस्सलाम मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं।

लेखकों से अनुरोध

कृपया आप अपने लेख सुन्दर, तथा स्पष्ट लिखें, पन्ने के एक ओर लिखें, सरल लिखें। न अरबी इबारत लिखें न संस्कृत, उन का समझ में आने वाला सरल तथा शुद्ध (आसान और सहीह़) अनुवाद लिखें। (सम्पादक)

ऐ साह़िबे अर्शे बरी

अमतुल अजीज

ऐ साह़िबे अ़र्शे बरीं
ऐ ख़ालिक़े दुन्या व दीं
ऐ मालिके योमुल यक़ीं
तू है इलाहुल् आ़लमी
आ़ली तेरा दरबार है
ऊंची तेरी सरकार है
तूने किया पैदा जहां
जव्वो ज़मीनो आस्मां
शम्सो क़मर और इन्सो जां
फल फूल शाख़ें पत्तियां
क़ुदरत है इन सब से अयां
ह़िक्मत के हैं ये सब निशां
तू कारफ़रमा कार साज़
हम बन्दा तू बन्दा नवाज़
मुह़ताज हम तू बे नियाज़
हैं हम सभी को तुझ पे नाज़
अल्लाह व रह़मानो रह़ीम
क़ुद्दूस व गफ़्फ़ारो करीम
साझी तेरा कोई नहीं
तू है अ़ज़ीज़ और है मतीं
तेरी ह़ुकूमत हर कहीं
क़ब्ज़े में तेरे हैं जबीं
तू ज़ार्र व नाफ़िअ़ है बदीअ़
तू है लतीफ़ और तू है समीअ़
अव्वल है तू आख़िर है तू
और बातिनो ज़ाहिर है तू
जो चाहता करता है तू
तेरी नज़र है चार सू
मअ़बूद व वाह़िद और वह़ीद
तू मुब्दिओ मुह़्यो मुईद

वे जो भुला दिए गए

१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के एक गुमनाम योद्धा का स्मरण कर रहे हैं डा. महीप सिंह

इस वर्ष १८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के १५० वर्ष पूरे हो रहे हैं। उस से १०० वर्ष पूर्व १७५७ में प्लासी की लड़ाई में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को हराकर लार्ड क्लाइव ने इस देश में अंग्रेजी राज की नींव रख दी थी। इस एक सौ वर्ष की अवधि में अंग्रेजों ने इस देश की सभी राज–शक्तियों को पराजित करके अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। क्लाइव से लेकर डलिहौजी तक का इतिहास अनेक संघर्षों से भरा हुआ है। दिल्ली के मुगल बादशाह की सल्तनत के विषय मे कहा जाने लगा 'शाह आलम–दिल्ली से पालम।' मराठों की शक्ति नष्ट हो गई और बाजीराव (द्वितीय) पेशवा को कानपुर के पास बिठूर में स्थानबद्ध कर दिया गया। पंजाब में सिखों का राज्य समाप्त हो गया और रणजीत सिंह के नाबालिग पुत्र दलीप सिंह को ईसाई बनाकर इंग्लैंड भेज दिया गया। ५०० से अधिक छोटी–बड़ी रियासतों के राजाओं–नवाबों ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।

एक अंग्रेज इतिहासकार ने लिखा है कि हमने भारत पर अधिकार नहीं किया, स्वयं भारतीयों ने एक–एक प्रदेश जीतकर हमारे हवाले कर दिया। ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिकों में अंग्रेज सिपाही बहुत कम थे। अधिसंख्य सिपाही हिंदुस्तानी थे। १८५७ में इन्हीं सिपाहियों के विद्रोह के कारण अंग्रेजी राज्य की जड़ें हिल गईं थीं। मेरठ में मगल पांडेय ने जिस विद्रोह का बिगुल बजाया था वह उन्हीं सिपाहियों में से एक था, किंतु इन सिपाहियों में ऐसा कोई नहीं था जो उस पूरे विद्रोह को नेतृत्व दे सकता। नेतृतव अनायास उन बादशाहों, राजाओं, नवाबों आदि के हाथ में आ गया जिनके क्षेत्रों पर ब्रिटिश गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाते हुए अपना अधिकार कर लिया था। हैदराबाद, भोपाल, ग्वालियर, जम्मू–कश्मीर जैसे राज्यों के शासक न केवल इस विद्रोह से दूर रहे, वरन अंग्रेजों को पूरी तरह सहायता करते रहे। मेरठ से विद्रोह का डंका बजाते हुए ये सिपाही दिल्ली पहुंचे और उन्होंने नगर पर अधिकार करके अनेक अंग्रेज सिपाहियों को मौत के घाट उतार दिया। उन्हें वृद्ध, शक्तिहीन और विपन्न मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को अपना नेता बनाना पड़ा, यह सोच कर कि बादशाह के झंडे के नीचे विद्रोह में शामिल सभी तत्वों को एकत्र किया जा सकेगा, किंतु बादशाह के पास विद्रोह का केंद्रीय नेतृतव संभालने की न तो योग्यता थी, न शक्ति। १८५७ के सिपाही विद्रोह की जब भी चर्चा होती है तब नानाराव पेशवा, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मी बाई और कुंवर सिंह की बहुत चर्चा होती है, किंतु मौलवी अहमद उल्ला के योगदान को उताना स्मरण (याद) नहीं किया जाता जितना किया जाना चाहिए।

जिन अंग्रेज इतिहासकारों ने इस विद्रोह पर पुस्तकें लिखीं उन्होंने रणकुशलता, संगठन शक्ति और अद्‌भुत वीरता के लिए मौलिवी अहमदउल्ला की बड़ी प्रशंसा की है। वीर सावरकर ने अपनी पुस्तक १८५७ का भारतीय स्वातंत्र्य समर में उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा है कि अहमद ने अपनी दृढ़ता और वीरता से अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया था। ब्रिटिश इतिहासकार जी.बी. मालेसन ने उस समय लिखा था– मौलवी अहमद स्वतन्त्रता संग्राम के महानतम नायकों में से एक था। उस समय मौलवी की रणकुशलता और नेतृत्व योग्यता का ऐसा आतंक अंग्रेज शासकों पर फैल गया था कि उन्होंने मौलवी को जीवित या मृत पकड़ने के लिए ५० हजार रूपये का इनाम घोषित कर दिया। मौलवी अहमद फैजाबाद के एक प्रतिष्ठित तालुकेदार थे। अंग्रेजों ने जब अपनी विस्तारवादी नीति के तहत वाजिद अली शाह की अवध की नवाबी समाप्त कर दी तो उसी के साथ मौलवी अहमदउल्ला के तालुके को भी अपने अधिकार में ले लिया। अंग्रेजों के इस काम से मौलवी का बहुत क्षुब्ध हो जाना स्वाभाविक था।

इतिहासकार मानेसन ने भी लिखा है कि भारत के अनेक भागों में विद्रोह की अग्नि प्रज्ज्वलित करने वालों का नेता निश्चित रूप से मौलवी ही था। उसके द्वारा संचालित संगठन की शाखाएं संपूर्ण भारत में फैल गई थीं। अपनी यात्राओं से जब वह वापस आए, उन्होंने बड़े क्रान्तिकारी पत्र लिखे।

राजद्रोह के आरोप में उन्हें बंदी बना कर उन पर मुकदमा चलाया गया और फांसी की सजा सुना दी गई। इस बीच सिपाही विद्रोह की आग चारों और फैल गई थी। मौलवी फैजाबाद जेल से फरार हो गए और लखनऊ पहुंचकर नवाब वाजिद अली शाह की पत्नी जीनत महल से जा मिले। अवध पर कब्जा करने के पश्चात अंग्रेजों ने वाजिद अली शाह को कलकत्ता में कैद कर दिया था। बेगम जीनत महल और मौलवी ने विद्रोही सिपाहियों के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया। चिलहट के युद्ध में विद्रोही सैनिकों को भारी सफलता मिली। इस बीच मौलवी ने रूहेलखंड पहुंच कर विद्रोह को संगठित करने का प्रयास किया। आठ हजार की घुड़सवार सेना सहित वह शाहजहांपरु पहुंचे। वहां कोलिन कैंपबेल के नेतृत्व में ईस्ट इंडिया कंपनी की विशाल सेना से हार का मुंह देखना पड़ा, किंतु अंग्रेजी सेना के अनथक प्रयत्नों के बावजूद मौलवी पकड़ में नहीं आए और बरेली पहुंच गए। दिल्ली और लखनऊ के पतन के पश्चात विद्रोही सिपाहियों के झुंड के झुंड बरेली पहुंच रहे थे। कैंपबेल के पास आधुनिक तोपों तथा अन्य शस्त्रों से सुसज्जित बड़ी सेना थी। अंग्रेज लड़ाई भेले ही जीत गए, किंतु अहमदउल्ला, नानासाहब पेशवा तथा अन्य नेताओं को पकड़ पाने में उन्हं सफलता नहीं मिली। असफलताओं के बाद भी अहमदउल्ला ने हिम्मत नही हारी। बिखरे हुए विद्रोही सिपाहियों को लेकर वह अंग्रेजों से एक निर्णायक युद्ध करना चाहते थे। इस दृष्टि से उन्होंने शाहजहांपुर के पास की एक छोटी सी रियासत पोवेन के राजा जगन्नाथ सिंह के पास बेगम जीनत महल की मोहर लगा एक पत्र भेजा और मिलने की इच्छा व्यक्त की।

मौलवी पावेन के राजा को अपने अभियान में साथ लेना चाहते थे। राजा ने लिखा कि वह मौलवी साहब से स्वयं मिलना चाहता है। उनका आमंत्रण पाकर मौलवी एक ही पर चढ़कर उससे मिलने के लिए पोवेन पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ जब उन्होंने देखा कि किले के दरवाजे पूरी तरह बंद हैं। परकोटे पर सशस्त्र सैनिक पहरा दे रहे थे। इसी समय राजा जगनाथ सिंह के भाई ने उन पर गोली दाग दी। हाथी के हौदे में बैठे मौलवी को गोली लगी और वहीं उनका प्राणांत हो गया। जिस रणकुशल और बहादुर मौलवी को सभी प्रकार के प्रयत्नों के बाद भी अंग्रेज अधिकारी न पकड़ सके थे वह अपने ही देश के एक विश्वासघाती के हाथों मोरे गए। जगन्नाथ सिंह मौलवी के शव को शाहजहांपुर के अंग्रेजो पड़ाव पर ले गया। उसे ५० हजार रूपये का पारितोषिक प्राप्त हुआ। १८५७ का विद्रोह असफल हो गया, किंतु अपने पीछे वह स्वतंत्रता प्राप्ति और अंग्रेजी राज्य की समाप्ति के प्रयासों की एक लंबी परंपरा छोड़ गया। मैं समझाता हूँ कि १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के १५०वें वर्ष में मोलवी अहमदउल्ला शाह और उनके जेसे अन्या योद्धाओं की स्मृति को सजीव करना उचित होगा।

(दैनिक जागरण से साभार)

फ़ज़ा को करें साफ़

हर निगाह में नज़र आते इंसानियत के क़ातिल,
क्या हैं उनके गुनाह बख़्शने के क़ाबिल?
गर करने बैठें हम इनके सितमों का हिसाब,
समा जाएंगी इनमें कई किताबें।
फीकी हो जाती है ईद, रूठ जाती है दीवाली,
गर पड़ गयी भूले से निगाह इनकी काली।
इनके सितमों को देखकर जागते क्यूं नहीं जज़्बात?
आइए उठायें शम्मे हिफ़ाज़त को अपने हाथ
कर दें गुनाहगारों के ज़ुल्मों का इन्किशाफ़,
वजूद इनका मिटा कर फ़ज़ा को करें साफ़।

दिलों को मिला के छोड़ेंग

हम ये नफ़रत के अंधेरे मिटा के छोड़ेंगे।
दिलों में प्यार की शमअ़ जला के छोड़ेंगे।।
धर्म के नाम पर करते जो क़त्ल लोगों का।
धर्म तो प्यार है, उनको सिखा के छोड़ेंगे।।
भेड़ की शक्ल में जो भेड़िये हैं मज़हब के।
हम उनके चेहरों से मुखौटा हटा के छोड़ेंगे।
धर्म के नाम पे जो आग लगा रखी है।
सभी के मेल से उसको बुझा के छोड़ेंगे।।
खुदा के सामने इन्सान सब बराबर हैं।
यह ऊंच-नीच का झगड़ा मिटा के छोड़ेंग।।
बिला वजह ही जो दुश्मन बने हैं आपस में।
सभी जनों को गले फिर मिला के छोड़ेंगे।।
दिलों की दूरियां जो बढ़ गयीं हैं लोगों की।
मिटा के दूरियां दिलों को मिला के छोड़ेंगे।।

हरिनारायण शर्मा

औरतों के लिए अपमान या सम्मान

वसीम अहमद

इस्लाम में औरतों की जो स्थिति है, उस पर सेक्यूलर मीडिया का जबरदस्त हमला होता है। ये पर्दे और इस्लामी लिबास को इस्लामी कानून में स्त्रियों की दासता की मिसाल के रूप में पेश करते हैं। इससे पहले कि हम पर्दे के धार्मिक निर्देश के पीछे मौजूद कारणां पर विचार करें, इस्लाम से पूर्व समाज में स्त्रियों की स्थिति का अध्ययन करते है।।

भूतकाल में स्त्रियों का अपमान किया जाता था और इनका प्रयोग केवल काम–वासना के लिए किया जाता था। इतिहास से लिए निम्न उदाहरण इस तथ्य की पूर्ण रूप से व्याख्या करते हैं कि आदिकाल की सभ्यता में औरतों का स्थान इससीमा तक गिरा हुआ था कि उनको प्राथमिक मानव सम्मान तक नहीं दिया जाता था। बेबिलोनिया में औरतें अपमानित की जाती और उनके कानून में उनको सभी अधिकारों से वंचित रखा जाता था। यदि एक व्यक्ति किसी औरत की हत्या कर देता तो उसको दंड देने के बजाय उसकी पत्नी को मौत के घाट उतार दिया जाता था। यूनानी सभ्यता को प्राचीन सम्यताओं में अत्यन्त श्रेष्ठ माना है। इस 'अत्यन्त श्रेष्ठ' व्यवस्था के अनुसार औरतों को सभी अधिकारों से वंचित रखा जाता था और वे नीच वस्तु के रूप में समझी जाती थीं। वैश्यावृति यूनानी समाज के हर वर्ग में एक आम रिवाज बन गई थी। रोम सभ्यता में पुरूष को अपनी पत्नी का जीवन छीनने का अधिकार था। वैश्यावृति और नग्नता रोमवासियों में आम थी। मिस्री लोग स्त्रियों को शैतान का रूप समझते थे। इस्लाम में पहले अरब में औरतों को नीच माना जाता था और जब कभी किसी लड़की का जन्म होता तो उसे जीवित जमीन में गाड़ दिया जाता था।

लेकिन १४०० साल पहले जब इस्लाम इस दुनिया में आया तो उसने औरतों को उनके अधिकार दे दिए और उसे अपेक्षा करता है कि वो अपना स्तर बनाए रखेंगी। आम तौर पर लोग ये समझते हैं कि पर्दे का संबंध केवल स्त्रियों से है। हालांकि पवित्र कुरआन में अल्लाह ने औरतों से पहले मर्दों के पर्दे का वर्णन किया है:–

"ईमानवालों से कह दो कि वे अपनी नजरें नीची रखें और अपनी पाकदामनी की सुरक्षा करें। ये उनको अधिक पवित्र बनाएगा और अल्लाह खूब परिचित है हर उस कार्य से जो वो करते हैं।" (कुरआन, २४:३०)

उसी क्षण जब किसी व्यक्ति की नजर किसी औरत पर पड़े तो उसे चाहिए कि वो अपनी नजरें नीची कर ले। कुरआन की सूरा नूर में कहा गया है–

"और अल्लाह पर ईमान रखने वाली औरतों से कह दो कि वे अपनी नजरें नीची रखें और अपनी पाकदामिनी, की सुरक्षा करें और वे अपनेबनाव–श्रृंगार और आभूषणों को ना दिखाए, इसमें कोई आपत्ति नहीं जो सामान्य रूप से नजर आता है और उन्हें चाहिए कि वो अपनी सीनों पर ओढ़नियां ओढ़ लें और अपने पतियों, बापों, अपने बेटों के अतिरिक्त किसी के सामने अपने बनाव श्रृंगार न प्रकट करें।" (कुरआन, २४:३१)

पवित्र कुरआन और हदीस (पैगम्बर के कथन) के अनुसार पर्दे के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जैसे शरीर का पर्दा कि शरीर ढका रहना चाहिए, धारण किया गया वस्त्र ढीला हो और ये शरीर के अंगों को प्रकट न करे, वस्त्र पारदर्शी (नजर पार हो जाने वाला) न हो कि शरीर के भीतरी हिस्से दिखाई दें –

वस्त्र भड़कीला ना हो कि विपरीत लिंग को आकर्षित करे, पहना हुआ वस्त्र विपरीत लिंग के वस्त्र से ना मिलता हो।

पूर्ण पर्दा नैतिक व्यवहार और आचरण को भी अपने अंदर समोए हुए है। वस्त्र के द्वारा पर्दे के अलावा ऑखों और विचारों का भी पर्दा होना चाहिए। किसी व्यक्ति के चाल–चलन बात–चीत एवं व्यवहार को भी पर्दे के दायरे में लिया जाता है। पर्दे का उपदेश औरतों को क्यों दिया जाता है इसके कारण का पवित्र कुरआन में उल्लेख किया गया है–

"ऐ नबी! अपनी पत्नियों, पुत्रियों और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे (जब बाहर जाएं) तो ऊपरी वस्त्र से स्वयं को ढॉक लें! ये अत्यन्त आसान है कि वे इसी प्रकार जानी जाएं और दुर्व्यवहार से सुरक्षित रहें और अल्लाह तो बड़ा क्षमाकारी और दयालु है।"

(कुरआन, ३३:५६)

पवित्र कुरआन कहता है कि औरतों को पर्दे का इसलिए उपदेश दिया गया है कि वे पाकदामनी के रूप में देखी जाएं। पर्दा उनसे दुर्व्यवहार को भी रोकता है। कुरआन की इस आयत का उदाहरण मैं आपको दो जुड़वा बहनों के जरिए देता हूँ। मान लजिए कि समान रूप से सुन्दर दो जुड़वा बहनें सड़क पर चल रही हैं एक केवल कलाइ और चेहरे को छोड़कर पर्दे में पूरी तरह ढकी हो और ब्लाउज पहने हंए है। एक लफंगा किसी लड़की को छेड़ने के लिए किनारे खड़ा हो तो ऐसी स्थिति में वह किससे छेड़–छाड़ करेगा। उस लड़की से जो पर्दे में है या जो मिनी स्कर्ट पहने हुए है। स्वाभाविक रूप से वह मिनी स्कर्ट वाली लड़की से छेड़–छाड़ करेगा। ऐसे वस्त्र विपरीत लिंग को अप्रत्यक्ष रूप से छेड़–छाड़ और दुर्व्यवहार का निमंत्रश्ण देते हैं। कुरआन बिल्कुल सही कहता है कि पर्दा औरतों के साथ छेड़–छाड़ और उत्पीड़न को रोकता है।

औरतों की आजाकदी का पश्चिमी दावा एक ढोंग है, जिसके सहारे वे उनके शरीर का शोषण करतेहैं, उनकी आत्मा को गंदा करते हैं और उनके मान सम्मान से उनको वंचित रखते हैं। पश्चिमी समाज दावा करता है कि उसने औरतों को ऊपर उठाया है। इसके विपरीत उन्होंने रखैल और समाज की तितलियों का स्थान दिया है जो केवल जिस्म बेचने वालियों और काम इचछुकों के हाथों का एक खिलौना है, जो कला और संस्कृति के रिंग–विरंगे पर्दे के पीछे छिपे हुए हैं। आज अमेरिका को दुनिया का सबसे उन्नतिशील देश समझा जाता है। १९६० ई. की एफ.बी. आई. रिपोर्ट से पता चलाता है कि अमेरिका में उस साल १,०२,५५५ बलात्कार घटनाएं दर्ज की गई। रिपोर्ट में यह बात भी बताई गई है कि इस प्रकार की कुल घटनाओं में से केवल १६ प्रतिशत घटनाएं ही प्रकाश में आ सकी हैं। अगर इस पूरी संख्या को साल के ३६५ दिनों में बांटा जाए तो प्रतिदिन के लिहाज से १७५६ की संख्या सामने आती है। एक दूसरी रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका में प्रतिदिन १६०० बलात्कार की घटनाएं पेश आती हैं।

उस दृश्य की कल्पना कीजिए कि अगर अमेरिका में पर्दे का पालन किया जाता, जब कोई व्यक्ति एक स्त्री पर नजर डालता और कोई अशुद्ध विचार उसके मस्तिष्क में उभरता तो वो अपनी नजरें नीची कर लेता। प्रत्येक स्त्री पर्दा करती अर्थात पूरे शरीर को ढक लेती सिवाय कलाई और चेहरे के। इसके बाद यदि कोई व्यक्ति उसके साथ बलात्कार करता तो उसे मृत्यु दंड दिया जाता । मैं आपसे पूछता हूँ कि ऐसी स्थिति में क्या अमेरिका में बलात्कार की दर बढ़ती या स्थिर रहती या कम होती। यकीनन कम होती। स्वाभाविक रूप से ज्यों ही इस्लामी कानून लागू किया जायेगा तो इसका परिणाम निश्चित रूपसे सकारात्मक होगा। यदि इस्लामी कानून संसार के किसी भी हिससे में लागू किया जाए, चाहे अमेरिका हो या यूरोप, समाज में शान्ति आएगी। पर्दा औरतों का अपमान नहीं करता बल्कि उन्हें ऊपर उठाता है और उनकी पवित्रता और मान की रक्षा करता है।

●●●

मानवता का सन्देश

हमारे मुल्क में मुख़्तलिफ मज़ाहिब के मानने वाले बसते हैं। सनातनधर्मी हैं जो मूर्ति पूजक हैं आर्य समाजी हैं जो मूर्ति पूजा के मुख़ालिफ़ हैं, बौधी हैं जो ख़ुदा के वजूद ही के मुनकिर हैं जैनी हैं जो अपने तीर्थंकर (इंसाने कामिल) ही को ख़ुदा मानते हैं। सिख हैं जो गुरू ग्रंथ को सब कुछ मानते हैं। ईसाई हैं जो अकानीमे सलासा के क़ाइल हैं ग़रज़ कि इस्लाम से बहुत दूर हैं।

हमारा फ़र्ज़ है कि उन को इस्लाम से परिचित कराएं, लेकिन जैसा कि देखने में आ रहा है रहेंगे वह अपने मज़हब ही पर इल्ला माशाअल्लाह ऐसी सूरत में हम उन को उन बातों की दअ़वत दें जो हर मज़हब में पसन्दीदा हैं जैसे इन्सानों से हमदर्दी (सहानुभूति) वक़्त पड़े तो एक दूसरे की मदद, ख़ुशी, ग़मी में एक दूसरे के साथ शरीक होना, सच्चाई दयानतदारी अपनाना, फ़र्ज़ शिनासी (कर्तव्य प्रायणता) की अ़मली दअ़वत देना, जुवा, शराब, धोख़ा, घूस चोरी डकैती, लड़ाई झगड़े से दूर रहना और लोगों को दूर रखने की दअ़वत देना, दूसरों की बहन बेटियों को अपनी बहन बेटी की तरह जानना, भूखों को खाना, प्यासों को पानी पिलाना, नंगों को कपड़ा मुहैया करना, अन पढ़ों को तअ़लीम (शिक्षा) देना, इस तरह के बहुत से काम हैं जिन में सारे मज़ाहिब बल्कि ला मज़हब (नास्तिक) भी मुत्तफ़िक़ (एक मत) हैं बस इन बातों की दअ़वत दी जाए यही मानवता का सन्देश (पयामे इन्सानियत) है इस देश में यह काम बहुत ही ज़रूरी है और इसी से अम्न व सुकून हासिल हो सकेगा।

सैलानी की डायरी

एम.हसन अंसारी,

नागपुर १२ फरवरी २००७:

कारपोरेशन का सफाई कर्मचारी समय से अपनी ड्यूटी पर आ गया। झाड़ू फावड़ा साथ है। अपने हलके में झाड़ू लगाया। काम पूरा करके झाड़ू किनारे रखा और फावड़े से कूड़े के ढेर को उलटने पलटने लगा उस में से उपयोगी वस्तुओं को, जो अब उपयोगी नहीं रहीं किन्तु कबाड़ खाना की खूराक है, एक एक करके चुनने और अलग अलग बोरी में भरा। थोड़ी देर में पॉच बोरी कबाड़ तैयार। किसी में पालीथीन के अनकुपियोगी थैले, किसी में गत्ते, किसी में शीशियॉ किसी में लोहा लक्खड़। बिखरे हुए कूड़े को एकसाथ किया जिसे कूड़ा गाड़ी ले जायेगी। फावड़ा किनारे रखा। नल पर हाथ–पैर–मुँह धोया। रूमाल से मुँह पोंछा। साइकिल उठाया। कबाड़ की बोरियों को कबाड़ी के यहॉ डाल आया। इसके उसे पचास रूपये तो मिल ही गये होंगे। अब आप इसे उसका बोनस कहें, ओवर टाइम कहें या कुछ और कहें, पर रिश्वत नहीं कह सकते। वह रिश्वत जो दफ्तरों में फाइल निकालने, चिट्ठी जारी करने, सीक्रेट बेचने, फाइल को मिसप्लेस करने, फाइल के अहम कागज अथवा आवश्यकता पड़े तो पूरी फाइल गयाब करने के लिए ली जाती है। वह रिश्वत जो मरीजों से अस्पतालों में पर्ची की आड़ में ली जाती है, वह रिश्वत जो अदालातों में तारीख लेने के लिए ली जाती है वह रिश्वत जो थानों में धारा के हेरफेर अथवा जी.डी. में इन्द्राज के लिए ली जाती है, वह रिश्वत जो जुगाड़ लगा कर मुमकिन को नामुमकिन और नामुमकिन को मुमकिन कर दिखाने के लिए ली जाती है। कारपोरेशन का यह कर्मचारी निश्यच ही उन लाखों कर्मचारियों, अधिकारियों और नेताओं से बेहतर है जो रिश्वत के लिए राहें निकाल लेते हैं। और जो कामयाब होकर भी नाकामयाब हैं।

इस दुनियां की हकीकत एक कूड़ाखाना से अधिक नहीं। चतुर और समझदार लोग इस सांसारिक जीवन में काम की चीजें चुन लेते हैं जो उनके और समाज के काम आती हैं, शोधन और परिवर्धन के बाद और अपनी आखिररत की खेती के कामयाब किसान बन ने का प्रयास करते हैं। हंस के लिए मशहूर है कि वह मोती चुगता है और पत्थर के टुकड़ों को छोड़ देता है। जो जमीन बंजर या नाहमवार होती है उसे उपजाऊ हमवार खेल में बदलने के लिए मेहनत, धैर्य, श्रमशीलता और उम्मीद की जरूरत होती है, उसमें अनचाहे झाड़–झंखार को निकालने में कॉटों की चुभन को सहना पड़ता है तब कहीं जाकर वहॉ लहलहाती फसल दिखाई पड़ती है।

बुन्देलखण्ड १३ फरवरी:

बुन्देलखण्ड बुन्देलों का इलीका रहा है। रजिया सुल्ताना की याद ताजा कर देने वाली वीरॉगना झॉसी की रानी लक्ष्मी बाई की धरती। यहॉ के लिए कभी मशहूर था– जमीन हमवार नहीं पेड़ फलदार नहीं, औरत बेयार नहीं, मर्द वफादार नहीं। पर अब वक्त बदल चुका है। अपवाद पहले कम था अब अधिक। शबे बुन्देलखण्ड उसी तरह मशहूर है जैसे सुबहे बनारस या शामे अवध। बुन्देलखण्ड के कुछ स्थानों के नाम दिलचस्प है, मसलन 'एट' है एटा नहीं, 'आटा' है दाल नही, 'पूँछ' है सींग नहीं, 'टेढ़ागॉव' है सीधा गॉव नहीं, 'करबई' है 'कबरई' नहीं (महोबा), 'बरिच्छा' है 'वरीक्षा नहीं, 'कमासिन' कमसिन नहीं

बड़ी शान वाला हमारा खुदा है

बड़ी शाना वाला हमारा खुदा है।
नहीं उसका सानी कोई दूसरा।।
जिलाता वही है वही मारता है।
वही हर मरज की दवा है शिफा है।।
वो मालिक है राजिक है खालिक है सब का
दो आलम में हर सम्त जल्वा नुमा है।।
नहीं उस को पैदा किया है किसी ने।
मगर उसने आलम को पैदा किया है।।
हर इक हाल में देखता है वो हम को।
दिलों के वो हर राज को जानता है।।
हमें जर्रे: जर्रे: पता दे रहा है।
खुदा है, खुदा है, खुदा है, खुदा है।।
वो सूरज हो या चांद हो सितारे।
हर इक शै में मौजूद उसकी जिया है।।
जमाने की हर चीज अहले नजर को।
दलीले खुदा है, निशाने खुदा है।।

हिन्दुस्तानी मुसलमानों का पैग़ाम इंसानी दुन्या के नाम

हिन्दुस्तानी मुसलमानों का सर्वसामान्य संगठन आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने चिन्नई (मदरास) में अपने उन्नीसवें समारोह में पूरी इंसानी दुन्या से जो अपील की है वह एक दावतेफिक्र (चिन्तन का अहवान) भी है और दावते अमल भी। चूंकि यह एक ऐसें संगठन की तरफ से दावते फिक्र व अमल है जो हिन्दुस्तानी मुसलमानों की भावनाओं को प्रगट करता है। इसलिए यह पैगाम (सन्देश) पूरे मुस्लिम समुदाय की भावनाओं व अभियक्ति और परिस्थितियों के अनुकूल है आशा है। बड़े पैमाने पर इसका प्रकाशन किया जाएगा और मस्जिदों के इमाम साहिबान और वक्ता इस दावत को आम लोगों तक पहुंचाएंगे।

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का यह नुमाइंदा इजलास जिसमें मुसलमानों के विभिन्न विचारधारा, विभिन्न संस्थानों और संगठनों के प्रतिनिधि शरीक हैं संसार के मुसलमानों को इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाता है कि इस समय पूरे संसार में मुसलमानों को मस्लकी (पंथवादी), संगठनात्मक और नस्ली बुनियादों पर तकसीम करने, उनकी सफों (पंक्तियों) में बिखराव पैदा करनेा और उन्हें एक दूसरे के खिलाफ उकसाने की संगठित साजिश की जा रही है। जिस का उद्देश्य मुसलमानों को कमजोर, बेअसर और अपमानित करना और उन के अन्तर विरोधों से लाभ उठा कर पश्चिमी सत्ता का सिक्का जमाना तथा इस्लामी दुनिया तथा विकासशील देशों के आंतरिक मामलों में दखल देना और पूरी दुन्या में यहूदी सत्ता कायम करना है। मुसलमान चाहे कहीं भी हों और उनका सम्बन्ध किसी भी रंग व नस्ल और भाषा व इलाके से हो लेकिन वह एक ही उम्मत (समप्रदाय) के सदस्य हैं और पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल०) ने सच्चाई के पथ पर चलने वालों का जो क़ाफ़ला तैयार किया है वह उसका एक भाग हैं इसलिए तमाम मुसलमानों को और खास कर इस्लामी दुन्या को पश्चिम की इस साजिश को खूब अच्छी तरह समझ लेना चाहिए और हरगिज उनके हाथ का खिलौना नहीं बनना चाहिए।

यह एक सच्चाई है कि उम्मत के दर्मियान जितने मतभेद हैं उनसे कहीं अधिक वह आस्थाएं (अकीदे) हैं जिन पर पूरी उम्मत सहमत हैं। मौजूदा परिस्थितियों का तकाजा है कि मतभेदों को उभारने के बजाय जिन मूल्यों (कदरों) पर सहमत हैं उन को सामने रखते हुए एकता व सहयोग की फिज़ा पैदा की जाए और इस्लाम के दुश्मनों को इसका मौका न दिया जाए कि वह हमारी सफों (पंक्तियों) में बिखराव पैदा करें।

इस समारोह को एहसास है कि पश्चिमी ताकतें न मुसलमानों में केवल मतभेद पैदा कर रही हैं बल्कि जो लोग अपने आप को सभ्य का

मौ० सै० मु० राबेअ हसनी नदवी दावेदार और मानवाधिकार का पक्षधर कहते हैं वह उम्मते मुस्लिमा (मुस्लिम समुदाय) के जज़्बात को ठेस पहुंचाने और उनके दिलों को जखमी करने में कोई शर्म महसूस नहीं करते हैं। धर्म से दूरी बल्कि धार्मिक मूल्यों से दूरी और खुदगर्जी, स्वार्थ और मादियत (भौतिकता) की गुलामी की वजह से पश्चिमी कौमों को एहसास भी शाद बाकी नहीं रहा कि मुसलमान अपने धार्मिक आस्था के साथ कितनी महब्बत और तौकीर (सम्मान) का जज्बा रखते हैं कि उस पर अपनी जानकुर्बान कर देने को खोना नही बल्कि पाना समझते हैं। पिछले दिनों अपमाजनक कार्टून और बाज भड़काऊ बयानात के जरिये मुसलमानों के जज़्बात को चोट पहुंचाने की बिला वजह कोशिश की गई है। हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि ऐसी अपमान जनक हरकतें मानव अधिकार के विरूद्ध हैं और इंसानी शराफत और ज्ञान की सच्चाई के भी खिलाफ हैं। इसलिए दुन्या में सुख शांति को कायम रखने और जीओ और जीने दो के सिद्धांत पर तमाम गिरोहों को अपनी पहचान के साथ बाकी रहने के लिए ऐसी दिल दुखाने वाली हरकतों से बचना जरूरी है और मुसलमानों ने कुर्आन शरीफ के निर्देशों के अनुसार हमेशा दूसरों के धार्मिक जज़्बात को ठेस पहुंचाने से परहेज़ किया है।

यह इजलास (अधिवेशन) मुसलमानों से भी अपील करता है कि

वह अपने खिलाफ होने वाली योजनाबद्ध कोशिशों को नजर में रखें। कुछ सम्प्रदायिक शक्तियां प्रयासरत हैं कि मुसलमानों को उत्तेजित और बेबर्दाश्त किया जाए। ऐसी बातें कहीं जाएं कि मुसलमान सड़क पर निकल आएं और फिर उत्तेजनापूर्ण स्वभाव के नाम पर उन्हें बदनाम किए जाए और मुजरिम के कट घरे में खड़ा किया जाए। मुस्लिम दुश्मनी के नाम पर हिन्दुस्तान के बहुसंख्यक समुदाय (अक्सरियती फिरका) को संगठित किया जाए और इस से राजनीतिक लाभ उठाया जाए। हम समझदारी से काम लेकर बेमौका उत्तेजना से बचकर ऐसी साजिशों को नाकाम व असफल बना दें।

अधिवेशन को इस बात पर अफसोस है कि समाचार मध्यमों, जिन का फर्ज सच्चाई को पेश करना है, और जिनकी समाज के निर्माण में अहम भूमिका है, वह भी कई बार सही राह से भटक जाते हैं और किसी खास वर्ग को बदनाम तथा अपमानित करने के लिए कुछ लोगों का माध्यम बन जाते हैं। किसी बात को बिना जांच के एक घटना की सूरत से पेश करना, किसी घटना की गलत व्याख्या करना या उसके केवल एक पहलू को पेश करना और दूसरे पहलू की उपेक्षा करना बेइमानी है। पिछले दिनों अन्तर्राष्ट्रीय स्तर भी और हिन्दुस्तानी सतह पर भी बाज घटनाओं के सिलसिले में इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने की जो कोशिश की गई वह बहुत ही अफसोसनाक और निन्दनीय हैं बोर्ड समाचार माध्यमों से अपेक्षा करता है कि वह अपने कर्तव्यों को महसूस करें, मुसलमानों को बिलावजह बदनाम करने से बचें और मुसलमान संगठनों संस्थाओं और व्यक्तियों से भी अपील करता है कि वह अपने कौल और अमल (कथनी और करनी) के द्वारा इस्लाम की सही तस्वीर लोगों के सामने पेश करें और इस बात का ध्यान रखें कि हमारे गिरोही विभिन्नता (एख्तलाफात) शरअी कानून की गलत तस्वीर पेश करने का कारण न बन जाएं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस समय पूरे संसार में मुसलमानों के खिलाफ न केवल सैन्य बल्कि विचारधारा का हमला भी जारी है और इस परिस्थिति ने सलीबी जंगों की याद ताजा कर दी है लेकिन मुसलमानों को ऐसी घटनाओं से हरगिज उत्साह का दामन हाथ से न छोड़ना चाहिए और हिम्मत न हारना चाहिए । इस्लामी दुन्या और मुस्लिम उम्मत पर पहले भी ऐसी घटनाएं गुजर चुकी हैं। इन हालात ने कुछ समय के लिए जरूर आघात पहुंचाया है लेकिन इस्लाम की उन्नति और मुसलमानों का अपने दीन से लगाव पर कभी कोई आंच नहीं आ सकी। सख्त व मुश्किल मौजूदा परिस्थितियों के बहुत से आशाजनक परिणाम भी देखने में आ रहे हैं। मुसलमानों के इमानी गौरव में इजाफा भी हुआ है। नई नस्ल में अपने दीन से लगाव और उसके लिए हरतरह की कुर्बानी का जज़्बा बढ़ा है। पूरे संसार में दावते इस्लाम की कोशिशें शुरू हो गई हैं। लोग कुर्आन और पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में जानने और सत्य को समझने की कोशिश कर रहे हैं। और यह सोच मुसलमानों के लिए अति उत्साह जनक है क्योंकि मुसलमानों को तो प्राजित किया जा सकता है परन्तु इस्लाम को प्राजित नहीं किया जा सकता। इस दीन की माकूलियत, मानव स्वभाव के अनुकूल नियम व कानून, दिल व दिमाग को फतह करने की क्षमता और इसकी सादगी और इन्सानी जरूरतों और हितों से मेल वह खूबियां हैं जिन्होंने हमेशा विरोधी विजेताओं के दिलों को फतह किया है। इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि उत्साह और साहस से काम लें, हिम्मत न हारें और अपने अंदर इस्लाम का दावती चरित्र पैदा करने की कोशिश करें। इस बात को न भूलें कि मुसलमान जिस माहौल में रहता है वह वहां भलाई, मानव सम्मान, न्याय व इंसाफ के मूल्यों को बढ़ावा देता है और भारतीय मुसलमानों ने अपनी इस जिम्मेदारी को भुला दिया है। वह इस देश में मानव सम्मान, न्याय व इंसाफ सहानभूति व हमदरदी के ध्वजावाहक (अलमबर्दार) बन कर उभरें।

मुसलमानों को यह बात जरूर ध्यान में रखना चाहिए कि मौजूदा परिस्थितियों में पूरी दुन्या में अमूमन और हिन्दुस्तान में खासतौर से इस्लाम की सुरक्षा और उम्मत को उन के दीन से जोड़े रखने में दीनी मदरसों की अहम भूमिका है। अगर कहा जाए कि यह मुसलमानों के मिल्ली व मजहबी वजूद के लिए शहरग (जीवन स्रोत) का दर्जा रखते हैं तो अनुचित न होगा। मदरसों की इस भूमिका को कायम रखने के लिए आवश्यक है कि वह इस उम्मत के सहयोग से चलें और हुकूमत के असर से आजाद रहें। इसीलिए आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड ने हुकूमत के अधीन "मदरसा बोर्ड" के

(शेष पृष्ठ १८ पर)

एक अहम फ़तवा

प्रश्न : क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन इस मसअले में कि :

हमारे बाराबंकी के/शरिक़ी (पूर्वी) इलाक़े कठवाही और भटयाने में क़ुर्बानी के सिलसिले में यह रिवाज पड़ गया है कि बड़े जानवर जैसे पड़वा की क़ुर्बानी में सात हिस्सों के बजाए छे हिस्सेदार शरीक होते हैं और जानवर की क़ीमत में सब छे हज़रात बराबर बराबर शरीक होते हैं। लेकिन क़ुर्बानी सात आदमियों के नाम से करते हैं। उस में सातवा नाम हुज़ूर (सल्ल०) का शामिल करते हैं। मैं ने कहा सातवां हिस्सा जो हुज़ूर (सल्ल०) के नाम होता है उसके मसारिफ़ कोई एक आदमी बर्दाश्त करे छे पर तक़सीम न हो तो मेरी बात का कोई असर न लिया गया लिहाज़ा इस मसअले में शरअ़ी हुक्म से आगाह फ़रमायें नीज़ यह भी फ़रमाइये कि क्या कई लोग मिल कर एक बकरा खरीदें और हुज़ूर (सल्ल०) की जानिब से क़ुर्बानी करें तो यह दुरुस्त होगा?

प्रश्न करने वाला : सय्यिद मुईद अशरफ़

उत्तर : मलिकुल वह्हाब की मदद से : आपने बजा फ़रमाया । सातवें हिस्से में छे या उससे कम की शिरकत से वह सातवां न रहा, यूं ही सात से ज़ाइद शरीक हों जब भी कामिल सातवां न रहेगा और जब वह हिस्सा सातवें से कम हो गया तो उस में क़ुर्बत न रही और इनअ़िदामे क़ुर्बत के बाइस किसी की क़ुर्बानी न हुई। (हिदाया की इ़बारत) इस की नज़ीर यह है कि किसी मय्यित ने बीवी और एक बेटा छोड़ा और तर्के में एक पड़वा छोड़ा, फिर उन दोनों ने उस पड़वे की क़ुर्बानी की तो किसी की कुर्बानी न हुई इस लिए कि बीवी का हिस्सा औलाद की मौजूदगी में आठवां हिस्सा होगा, लिहाज़ा सातवें हिस्से से कम होने की वजह से उस के हिस्से की क़ुर्बानी न होगी और जब उसकी न हुई तो बेटे की क़ुर्बानी न हुई। देखें ऐनी हाशिया हिदाया जिल्द ३ पृ. ४२६ (अ़रबी इ़बारत) यहीं से ज़ाहिरहो गया कि कई लोगों की तरफ़ से एक बकरे की क़ुर्बानी भी नहीं हो सकती, अलबत्ता चन्द लोग एक बकरा ख़रीद कर या पड़वे के सातवें हिस्से का मालिक बना दें और वह बकरा या पड़वे का सातवां हिस्सा उसी एक की तरफ़ से हो तो उस बकरे या सातवें हिस्से की क़ुर्बानी हो जाएगी ऐसी सूरत में उसी एक की तरफ़ से क़ुर्बानी हुई और उस क़ुर्बानी का सवाब उसी को मिलेगा और दूसरे लोगों को उस की मदद का सवाब मिलेगा इस तरह सभी छे लोगों की क़ुर्बानी भी हो जाएगी।

अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के नाम को क़ुर्बानी करने में शरीअ़ते मुतह्हरा ने बड़े जानवर में सात तक की ह्द कर दी, ज़ियादा शरीक नहीं हो सकते अगर होंगे तो वह क़ुर्बानी न रही खाने का गोश्त हो गया लिहाज़ा बड़े जानवर में सात से ज़ियादा हिस्से न हों तो सब शरीकों को कुर्बानी का सवाब मिलेगा और अगर सात आदमी एक पड़वा न ख़रीद सकें तो यह मुम्किन है कि बहुत से आदमियों से चन्दा लें और यह चन्दा देने वाले सिर्फ़ सात या उससे कम लोगों का उस चन्दे का मालिक बना दें और यह लोग जो सात या उससे कम हों पड़वा ख़रीद कर अपनी तरफ़ से क़ुर्बानी करें उन को ऐन क़ुर्बानी का सवाब मिलेगा और चन्दा देने वालों को क़ुर्बानी में मदद करने का सवाब मिलेगा सहीह़ ह़दीस में है : अनुवाद : जिस ने किसी नेकी की रहनुमाई की उस को उस नेकी करने वाले के बराबर अज्र मिलेगा।

रिज़वीया जिल्द ८ पृष्ठ ४५६ वल्लाहु तआ़ला अअ़लमु, कतबहू मुह़म्मद मुतीउ़र्रह़मान

ख़ादिम दारूल उ़लूम मज़हरे इस्लाम

मस्जिद बीबी जी

मुह़ल्ला सौदागरान

बरेली शरीफ़

हमारे मौलाना डाक्टर सैयद मुईद अशरफ़ साहिब ने यही प्रश्न देवबन्द भेजा था वहां से भी यही फ़त्वा आया कि इस सूरत में किसी की भी क़ुर्बानी न होगी।

मानव शरीर के बारे में जानकारियां

हमारे शरीर का ५० प्रतिशत भाग मांसपेशियों के रूप में है। प्रत्येक मांसपेशी अनेक तंतुओं से मिलकर बनी है। ये तंतु बाली के समान पतले होते हैं पर मजबूत इतने कि अपने वजन की तुलना में एक लाख गुना वजन उठा सकें।

औसतन मनुष्य के सिर में १,२०,००० बाल होते हैं बालों की वृद्धि प्रतिमास तीन चौथाई इंच होती है। किसी के बाल तेजी से तो किसी के धीमी गति से बढ़ते हैं।

मनुष्य के बालों की आयु डेढ़ वर्ष से लेकर ६ वर्ष तक होती है। आयु पूरी कर के बाल अपनी जड़ से टूट जाता है और उसके स्थान पर नया बाल उगता है।

हमारी एक वर्ग इंच त्वचा में प्रायः ७२ फुट लंबी तंत्रिकाओं का जाल बिछा होता है। इतनी ही जगह में रक्त नलिकाओं की लंबाई नापी जाए तो वे भी १२ फुट से कम नहीं हींगी।

हमारे गुर्दे में १० लाख से भी अधिक नलिकाएं होती हैं। इन सबको एक लंबी कतार में रखा जाए तो ११० किलोमीटर लंबी डोरी बन जाएगी।

चमड़ी की सतह पर प्रायः दो लाख स्वेद ग्रंथियां होती हैं, जिनमें से पसीने के रूप में हानिकारक पदार्थ बाहर निकलते रहते हैं। पसीना दिखता तो तब है जब वह बूंदों के रूप में बाहर आता है लेकिन वह धीरे–धीरे हमेशा ही रिसता रहता है।

मनुष्य की दाढ़ी में औसतन ७५०० से १५००० बाल होते हैं।

एक वर्ष में हम एक करोड़ (१० मिलियन) बार सांस लेते हैं।

शरीर की सबसे कठोर हड्डी जबड़े की तथा सबसे मजबूत मांस पेशी जीभ की मानी जाती है।

हमारे गुर्दे एक घंटे में इतना रक्त छानते हैं, जिसका वजन शरीर के भार से दुगुना हेाता है।

हर बच्चा अपना भाग्य, लेकर पैदा होता है।

कपिल की ख्वाहिश है कि वे ३० बच्चों के बाप बनें। अभी तक ११ बच्चों के पिता बन चुके लोहार और उसकी पत्नी सोना अपने 'ऑपरेशन बच्चा पैदा करो' मिशन को लेकर खासे उत्साहित है। लोहार दंपति परिवार नियोजन के सख्त खिलाफ हैं और इनका तर्क है कि जब ईश्वर संतान दे रहा है तो हम उसे रोकने वाले कौन हैं।

कपिल ने कहा कि मैं इस धारणा में विश्वास रखता हूँ कि बच्चे ईश्वर का उपहार है। हर बच्चा अपना भाग्य लेकर धरती पर कदम रखता है। मुझे ईश्वर पर भरोसा है और वही इन बच्चों का ख्याल रखेगा। उसकी पत्नी सोना अपने नवजात शिशु के सिर पर हाथ फेरते हुए कहती है कि बच्चे तो ईश्वर के उपहार हैं। बार–बार प्रसव पीड़ा झेल चुकी यह महिला परिवारनियोजन के खिलाफ है।

अपने नाम एक अनूठा रिकार्ड कायम करने की राह पर चल रहे बिहार के औरंगाबाद जिले के एक गांव के रहने वाले कपिल देव की दिली ख्वाहिश है कि उसके कम से कम ३० बच्चे हों। उसकी पत्नपी ३० वर्ष की है और पिछले दिनों को उसने अपनी ११वीं संतान को जन्म दिया। कपिल ने कहा कि मरे लिए यह जश्न मनाने का मौका है क्योकि मैं अपने सपने को साकार करने की राह पर हॅं।

मुझे उम्मीद है कि अगले साल तक एक दर्जन बच्चों का बाप बनने का रिकार्ड अपने नाम कर लूंगा। इसके बाद ३० के आंकड़े को छूने के लिीए वह पत्नी के सहयोग से अपने मिशन मे लगा रहेगा। लोहार का दावा है कि इस मिशन में उसकी पत्नी उसके साथ है। रोचक बात यह है कि यह व्यक्ति पशुओं के पैर में नाल ठोंकने का धधा कर अपने इस तेजी से बढ़ते कुंबे की परवरिश कर रहा है।

उसने कहा कि ११ बच्चे पैदा कर अपने गांव का वह अनूठा बाशिंदा बन गया है।

जागरूकता का कारण?

लोग जानते हैं कि रिडले ब्रिटेन की पतिष्ठित महिला और प्रसिद्ध पत्रकार हैं। ५ वर्ष पूर्व ईमान लायी थीं। जब से उनकी यही कोशिश है कि मुसलमानों की नयी नस्ल में इस्लाम का शऊर पैदा किया जाए। पिछले नवम्बर में काहिरा की वर्ल्ड एसेम्बली ऑफ मुस्लिम युथ में अपना लेख प्रस्तुत करते हुए रिडले ने मुस्लिम महिलाओं और नवजवानों से कहा था कि इस्लाम विरोधी दुष्प्राचर का बेहतरीन जवाब यह है कि वे अधिक से अधिक इस्लामी तरीका अपना कर अपने–अपने देशों के समाज में अपनी पहचान बनाएं।

पहली क़िस्त

शिर्क किसे कहते हैं?

मो० ख़ुर्रम अ़ली बिलहरी
अनुवादक– आफ़ताब आ़लम नदवी ख़ैराबादी

तौहीद हिन्दी जबान में एक जानने को कहते हैं – और शिर्क साझा करने को कहते हैं–अव्वलन मुसलमान पर यही फर्ज़ है कि अल्लाह तआ़ला की तौहीद को जाने और शिर्क से बचे, तौहीद इसका नाम नहीं कि ख़ुदा को ज़बान से एक कहे और अपनी हाजतों और मुरादों के वास्ते पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और पीरों की नज़रें माने इसी का नाम तो शिर्क है बल्कि तौहीद के मअ़ना है कि बस अल्लाह ही को हर चीज़ का मालिक व मुख़्तार जाने और ये समझें कि उसके सिवा पीर हों या पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हों या फरिश्ते हों या शहीद किसी को कुछ इख़्तियार उसके कारखाने में नही सब उसके रूबरू आजिज़ व बेसहारा हैं और शिर्क सिर्फ इसका नाम नहीं कि अल्लाह के सिवा आसमान और ज़मीन का मालिक किसी और को न जाने ये तो कोई मुशरिक और काफिर भी नहीं कहता है वो भी यही कहते हैं कि हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है बल्कि शिर्क के ये मअ़ना हैं कि अल्लाह ने अपने वास्ते जो चीजें ख़ास करली हैं इनमें किसी दूसरे को मिलाना जैसे मेंह का बरसाना, रिज़क़ का देना, बीमार का अच्छा करना, आफ़तों बलाओं से बचाना, औलाद देना, ग़ैब की बात जानना हर जगह पर हाज़िर व नाज़िर रहना, लोगों की मदद करना, जिलाना, मारना ये सब अल्लाह ही के इख़्तियार में हैं इनमें किसी दूसरे का इख़्तियार समझना बस यही शिर्क है कि जिसके मिटाने के वास्ते कुरआन शरीफ उतरा और पैग़म्बरे ख़ुदा काफिरों से लड़े–कुरआन शरीफ में हज़ारों जगह इसका बयान है–अगर सब आयतें लिखी जाएं तो किताब बड़ी हो जाये अब थोड़ी आयतें यहाँ बयान होती हैं। दिल से सुन्ना चाहिए सूरे अअ़राफ़ पारा नं. ९ आयत नं. १८८ अल्लाह तआ़ला फरमाता है "अपने नबी से कि तू कह दे ऐ मोहम्मद कि मैं मालिक नहीं अपनी जान के भले का न बुरे का जो चाहे अल्लाह और अगर जाना करता मैं गैब की बात तो बहुत खूबियां जमा कर लेता और मुझको बुराई कभी न पहुंचती मेरा काम सिवा इसके कुछ नहीं कि अजाब से डराता हूँ और सवाब की खुशी सुनाता हूँ ईमान वाले लोगों को" (फायेदह) ये तो सब जानते हैं कि पैग़म्बरे ख़ुदा के बराबर कोई अल्लाह का बनदा मकबूल नहीं फिर जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़ुद अपनी जान के नफअ़ और जरर का कुछ इख़्तियार नहीं और वो भी गैब की बात नहीं जानते तो और इमाम और पीर किस गिनती और शुमार में हैं इस आयत से साफ मअ़लूम हुआ की मदद चाहना और हाजतें मांगना सिवाये अल्लाह के किसी से न चाहिए पीर हों या पैग़म्बर औलियाँ हूँ या शहीद हॉ बाअजेह लोग कहते हैं कि पैग़म्बरे ख़ुदा ने बहुत सी चीज़ों की खबर दी कि आगे यूँ होगा–अगर इल्मे गैब इन को न था तो खबर क्यों कर दी और औलिया का भी इसी तरह का हाल है देखो फुलाने बुजुर्ग ने कहा था कि हम फुलाने दिन मरेंगें वैसा ही हुआ और किसी से कहा था कि तेरे चार बेटे होंगे सो चार ही हुए इसका जवाब ये है कि ये इनको अल्लाह के बताने से मअ़लूम हुआ था इसको इल्मे गैब नहीं कहते हैं जिस कदर अल्लाह ने जिसको बतलादिया बस उसी कदर उसको हाल मअलुम हुआ जियादह इससे हरगिज़ नहीं मअलूम हुआ मशहुर है कि ह़ज़रत याकूब अलैहिस्सलाम ह़ज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के गम से रोया करते थे, मअलूम न था कि वह कहाँ हैं जब ह़ज़रत युसुफ अ़लैहिस्सलाम मिस्र के बाद शाह हुवे तब इनको खबर मअलूम हुवी अगर आगे से जानते तो क्यों रोते और काफ़िरों ने ह़ज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर तुहमत बाँधी थी ह़ज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बहुत रन्ज हुआ था जब बहुत दिनों बाद ख़ुदा ने क़ुर्आन में फ़रमाया कि आइशा रज़ि० पाक है काफिर झूठे हैं तब ह़ज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खबर हुवी अगर आगे से मअ़लूम होता तो घम क्यों होता फिर जब पैग़म्बरों की ये हालत है तो भला बताउ औलिया का क्या रूतबा–हर एक चीज़ का हाल जानना आदमी का काम नहीं अल्लाह कि शान है। (जारी)

अल्लाह की याद-दिल का आराम

अब्दुर्रशीद खैरानी

कुरआन मजीद की सूराःबकरः की आयत नम्बर ५२ में अल्लाह तआला का फरमान हैः—

सो तुम मुझे याद किया करो मैं तुम्हें याद किया करूंगा और मेरी शुकगुजारी करते रहना और नाशुक्री न करना।

इस आयत में अल्लाहतआला अपने बन्दो को अपनी याद व शुक्रगुजारी करने व नाशुक्री न करने का हुक्म देते हुए बता रहा है कि अगर तुम मेरी याद और शुक्रगुजारी में लगे रहोगे तो मैं भी तुम्हें हमेशा याद करूंगा यानी हमेशा मदद मिलती रहेगी। हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज किया कि या अल्लाह तआला! मैं तेरा शुक्र किस तरह अदा करूं! इरशाद हुआ कि मुझे याद रखा कर भूला मत कर। याद शुक है और भूलना कुफ्र है।

हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैह और दूसरे बुर्जुगों का कहना है कि अल्लाह की याद करने वाले को अल्लाह भी याद करता है और उसका शुक्र करने वाले को वह ज्यादा देता है और नाशुक्री करने वाले को अजाब (यातना) देता है।

अल्लाह तआला की याद करना और उससे डरने का मतलब उसके हुक्मों को मानना और उसकी पूरी इताअत (अनुसरण) करना है। किसी भी हालत में अल्लाह तआला की नाफरमानी नहीं की जाना चाहिए और हमेशा उसका जिक्र करना चाहिए और हर मामले में अल्लाह तआला का शुक्र अदा करनी चाहिए।

हजरत इब्ने अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हू फरमाते हैं कि अल्लाह तआला को याद करना, अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज है।

एक हदीसे कुदसी में है कि जो मुझे दिल में याद करता है मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ और जो मुझे किसी जमाअत (समूह) में याद करता है मैं भी उसे उससे बेहतर जमाअत में याद करता हूँ। मुसनद अहमद की एक हदीस में है कि वह जमाअत फरिश्तों की है जो शख्स एक बालिश्त मेरी तरफ बढ़ता है मैं उसकी तरफ एक हाथ बढ़ता हूँ और ऐ बनी आदम! अगर तू मेरी तरफ एक हाथ बढ़ता है तो मैं तेरी तरफ दो हाथ बढ़ूंगा और अगर तू मेरी तरफ चलते हुए आए तो मैं तेरी तरफ दौड़ता हुआ आऊँगा। सही वुखारी शरीफ में भी यह हदीम है।

कुरआन मजदि में कई स्थानों पर अल्लाह तआला ने अपना जिक्र करते रहने का हुक्म फरमाया है जैसेः

१. अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सूर मुज्जमिल की आयत में फरमाया है— और आप अपने रब के नाम को याद करते रहा कीजिए और हर तरफ से बे—तअल्लुक होकर उसी की तरफ मुतवज्जह हो रहिए।

२. सूरः रअ़द की आयत २८ में हैः—
जो लोग ईमान लाते और जिनके दिल अल्लाह की याद से आराम पाते हैं सुन रखे कि अल्लाह की याद से ही दिल आराम (इत्मीनान) पाते हैं।

३. सूरः अनकबूत की आयत ४५ में हैः—
यह किताब जो तुम्हारी तरफ उतारी गई है इसको पढ़ा करो और नमाज के पाबंद रहो। कुछ शक नहीं कि नमाज बेहयाई और बुरी बातों से रोकती है और अल्लाह का जिक्र बहुत बड़ी चीज है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाखबर है।

४. सूरः आले इमरान की आयत १९१ में हैः—
अकलमंद वह लोग हैं जो खड़े और बैठे और लेटे और हरहाल में अल्लाह को याद किया करते हैं।

५. सूरः आराफ की आयत नम्बर २०५ में है सुबह और शाम अपने रब को दिली ही दिल में आजिजी, खौफ और पस्त (धीमी) आवाज से याद करते रहो और गाफिल न होना जो लोग तुम्हारे परवरदिगार के पास हैं वे उस इबादत से गफलत नहीं करते और उस पाक जात को याद करते और उसके आगे सजदे करते रहते हैं।

६. सूरः युनुस की आयत ६१ में इरशाद हैः—
और तुम जिस हाल में होते हो या कुरआन में से कुछ पढ़ते हो या तुम लोग कोई (और) काम करते हो, जब उसमें लग जाते हो हम तुम्हारे सामने होते हैं और तुम्हारे परवरदिगार से जर्रा बराबर भी कोई चीज छुपी हुई नहीं है न जमीन में और न आसमान में और कोई चीज छोटी है या बड़ी मगर रोशन किताब में है।

७. सूरः शुअरा की आयत २१७ से २२० में हैः—
अल्लाह तआला अपने रसूल सल्लाहो अलैहि वसल्ल्म को फरमाता हैः—
और आप उस जबरदस्त, रहम करने वाले पर भरोसा रखो जो आपको उस वक्त भी देखता है जब आप तहज्जुद की नमाज के लिए खड़े होते हैं और उस वक्त भी आपके उठने बैठने को देखता है जब आप नमाजियों के साथ होते है। बेशक वह खूब सुनने वाला जानने वाला है।

८. सूरः हदीद की आयत नम्बर चार में है किः—
जो चीज जमीन में दाखिल होती है और जो उससे निकलती है और जो आसमान से उतरतीं है और जो उसकी तरफ चढ़ती है सब मालूम है और तुम जहाँ कहीं हो (अल्लाह) तुम्हारे साथ है

और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है।

९. सूरः जुखरूप की आयत ३६ में है:–

और जो अल्लाह तआला की याद से गाफिल होता है तो हम एक शैतान उस पर तैनात कर देते हैं फिर हर वक्त वह उसके साथ रहता है।

१०. सूरः रूम की आयत १७ में इरशाद है:–

तो अल्लाह की तसबीह (जमात) हर वक्त किया करो खास कर शाम के वक्त और सुबह के वक्त।

११. सूरः अहज़ाब की आयत नम्बर ४१–४२ मे है:–

१. ईमाम वालो अल्लाह को बहुत याद किया करो और सुबह व शाम उसकी तस्बीह (नमाज) पढ़ा करो।

अल्लाह तआला का जिक्र करते रहने का फरमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी दिये हैं।

हजरत अबू हुरैरह रज़िअल्लाह तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला का इर्शाद है कि जब मेरा बन्दा मुझे याद करता है और उसके होंठ मेरी याद में हिलते रहते हैं तो मैं उसके साथ होता हूँ। (इब्ने माजा)

२. हजरत अब्दुल्लाह बिन बुस्र रज़ियल्लाह तआला अन्हू से रिवायत है कि एक सहाबी यानी महान साथी ने अर्ज किया– या रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहिवसल्ल्म अहकाम तो शरीयत के बहुत से हैं (जिन पर अमल तो जरूरी हैं लेकिन) मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जिसको मैं हमेशा करता रहूँ। फरमाया–तुम्हारी जबान अल्लाह तआला के जिक्र (याद) से हर वकत तर रहे।

३. हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल्लाह सल्ललाहो अलैहि वसल्ल्म ने फरमाया– चार चीजें ऐसी हैं जिसको वे मिल गई उसको दुनियां और आखिरत की हर मलाई मिल गई। शुक्र करने वाला दिल, जिक्र करने वाली जबान, मुसीबतों पर सब्र करने वाला बदन और ऐसी बीबी जो न अपने नफस में ख्यानत करे यानी पाक दामन रहे और न शौहर के माल में खयानत करे। (तबरानी)

४. हजरत अबूदर्दा रदि अल्लाह तआला अन्हू से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल्म ने इरशाद फरमाया–अल्लाह तआला की तरफ से रोजाना (प्रतिदिन) दिन–रात बन्दो पर एहसान और सदका होता रहता है लेकिन कोई एहसान किसी बन्दे पर इससे बड़कर नहीं कि उसको अल्लाह तआला अपने जिक्र की तौफीक नसीब फरमा दे। (तबरानी)

५. हजरत अबू हुरैरह रदि अल्लाह तआला अन्हू से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल्म ने फरमाया– जो शख्स अल्लाह तआला का जिक्र कसरत (अधिकता) से करे वह निफाक से बरी है। (तबरानी जामेअ सगीर)

६. हजरत अबू सईद खुदरी रदि अल्लाह तआला अन्हू से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहो अलैहि वसल्ल्म ने फरमाया–बहुत से लोग ऐसे हैं जो नर्म–नर्म विस्तरों पर अल्लाह तआला का जिक्र करते हैं अल्लाह तआला उस जिक्र की बरकत से उनको जन्नत के आला (ऊँचे) दर्जों में पहुंचा देते हैं। (अबूयाला)

७. हरजत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया–जो लोग अल्लाह तआला के जिक्र के लिए जमा हों और उनका मकसद सिर्फ अल्लाह तआला ही की रजा हो तो आसमान से एक फरिश्ता अल्लाह तआला के हुक्म से उस मजलिस के खत्म होने पर) एलान करता है कि बख्शे–बख्शाए उठ जाओ। तुम्हारी बुराईयों को नेकियों में बदल दिया गया है। (मुसनदअहमद– तबरानी)

८. हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र रदिअल्लाह तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैंने अर्ज किया –या रसुलल्लाह सलल्लाहो अलैहि वसल्लम। जिक्र की मजलिस का किया अज्र (बदला) व इनाम है? फरमाया जिक्र की मजलिस का अज्र व इनाम जन्नत हैं जन्नत (मुसनद अहमद तबरानी)

९. हजरत अबू रजीन रदि अल्लाह तआला अन्हू फरमाते हैं कि रसूलल्लाह सललहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया क्या तुमको दीन की बुनियादी चीज न बताऊ जिससे तुम दीन और दुनियां की भलाई हासिल कर लो। अल्लाह तआला का जिक्र करने वालों की मजलिसों में बैठा करो और तन्हाई में भी जितना हो सके अल्लाह तआला के जिक्र में अपनी जबान को हरकत में रखो। (मिश्कात बहैकी)

१०. हजरत इब्ने अब्बास रदिअल्लाह तआला अन्हू फरमाते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज किया गया हमारे लिए किस शख्स के पास बैठना बेहतर है? फरमाया–जिसको देखने से तुम्हें अल्लाह तआला याद आएं जिसकी बातों से तुम्हारे अमल में तरक्की हो और जिसके अमल से तुम्हें आखिरत याद आ जाए।

११. हजरत अनस बिन मालिक रदिअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सलल्लाहु अलैहिवसल्ल्म ने फरमाया– जो शख्स अल्लाह तआला का जिक्र करे और अल्लाह ताअला के खौफ से उसकी आंखों से कुछ आंसू जमीन पर गिर पड़ें तो कियामत के दिन अल्लाह तआला उसे अज़ाब नहीं देंगे।

१२. हजरत अबू हुरैरह रज़िअल्लाहु तआला अन्हू से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म ने फरमाया–जो लोग किसी मजलिस में बैठे जिसमें न अल्लाह तआला का जिक्र करें और न अपने नबी पर दुरूद भेंजें तो वह मजलिस उनके लिए कियामत के दिन खसारे

का (घाटे का) सबब होगी। अब यह अल्लाह तआला को इख्तियार है चाहे उनको अजाब दे चाहे माफ फरमा दें। (तिर्मिजी)

१३. एक सहाबीया (रज़ि०) रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम से फरमाया – अपने उपर तस्बीह (सुब–हानल्लाह) और तहलील (ला–इलाह–इल्लल्लाह कहना) और तकदकीस (अल्लाह तआला की पाकी बयान करना मसलन सुब–हानल मलिकिल कुद्दूस कहना) लाजिम कर लो और उगंलियों पर गिना करो इसलिए कि उंगलियों से सवाल किया जाएगा कि उनसे कया अमल किये और जवाब के लिए बोलने की ताकत दी जाएगी और अल्लाह तआला के जिक्र से गफलत न करना वरना तुम अपने आपको अल्लाह तआला की रहमत से महरूम (वंचित) कर लोगी। (तिर्मिजी)

१४. हजरत इब्ने अब्बास रदिअल्लाह तआला अन्हू रिवायत करते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया– सबसे पहले जन्नत की तरफ बुलाए जाने वाले वे लोग होंगे जो खुशहाली और तंगदस्ती (दोनों हालतों में) अल्लाह तआला की तारीफ (हम्द) करते हैं। (मुस्तदरक हाकिम)

अल्लाह तआला की किताब कुरआन पाक की इन आयतों और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों से यह मालूम हुआ कि इन्सान को हमेशा और हर हालत में अल्लाह तआला का जिक्र करते रहना चाहिए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद पढ़ते रहना चाहिए। यह सच है कि मुसीबत व कठिन वक्तों पर अल्लाह ताअला पर भरोसा रखते हुए उसका जिक करने और नमाज पढ़कर सब्र करने से इन्सान को चैन व दिल को सुकून मिलता है इसमें कोई शक नहीं है। इस लिए हर इन्सान को अपने आपको अल्लाह तआला व रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमा बरदार बन्दा बन कर अल्लाह तआला का अधिकाधिक जिक्र और दरूद पढ़ते रहना चाहिए। इसी में दुनियां और आखिरत की कामयाबी है।

(पृष्ठ ४० का शेष)

धर्म संसद के पहले दिन के अधिवेशन में हिन्दू एकता का प्रस्ताव पारित किया गया हो लेकिन ज्यादा चर्चा हिन्दुओं की जनसंख्या वृद्धि की ही हुई। बड़े–बड़े संत महात्माओं ने हिन्दुओं का आहवान किया कि वे दस बच्चे पैदा करें। यदि वे लालन–पालन नहीं कर सकते तो दो बच्चे अपने पास रखें और आठ हमें दें। हम उनकी शिक्षा दीक्षा, भोजन वस्त्र आदि की व्यवस्था करेंगे। संतों ने काह कि अब बलिदान का समय आ गया है और ऐसे में अगर हम दो और हमारे दो में ही पड़े रहे तो वे दिन दूर नहीं कि आने वाले कुंभ और अर्द्धकुंभ में हिन्दू अल्पसंख्यक हो जाएंगे। ऐसी सूरत में अर्द्धकुंभ और कुम्भ का मेला लगेगा भी कि नहीं कुछ नहीं कहा जा सकता। विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण भाई तोगड़िया ने कहा कि जनसंख्या बढ़ने से गरीबी बढ़ जाएगी। जो यह बात कहता है वह अर्थशास्त्र नहीं जानता। जनसंख्या वृद्धि से कभी भी गरीबी नहीं बढ़ सकती। जब जनसंख्या कम थी आजादी के समय में तब प्रति व्यक्ति आय क्या थी और आज प्रति व्यक्ति आय क्या है यह इसी से अन्दाजा लगाया जा सकता है तो हम अन्न निर्यात कर रहे हैं। कपड़ा निर्यात कर रहे हैं और दूध तो विश्व की दो तिहाई आबादी को हम दे रहे हैं। इस लिए यह कहना कि जनसंख्या बढ़ जाएगी तो हम गरीब हो जाएंगे तर्क संगत नहीं है।

धर्म संसद नहीं भ्रम संसद कर रही है विहिप : ज्ञानदास

तीर्थराज प्रयाग (इलाहाबाद) के अर्द्धकुंभ नगर में विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) द्वारा आयोजित 'धर्म संसद' को 'भ्रम संसद' करार देते हुए अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ने कहा है कि राम जन्म भूमि से विहिप का कोई सम्बन्ध ही नही है।

अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत ज्ञान दास ने कहा कि विहिप की धर्म संसद महज एक छलावा है और वोट बैंक की राजनीति के लिए ही यह सब कुछ हो रहा है। उन्होंने कहा कि धर्मसंसद से अखाड़ों का कोई लेना देना नहीं है और न ही किसी भी अखाड़े का कोई आचार्य, महामंडलेश्वर या मंडलेश्वर इसमें शामिल होगा। उन्होंने कहा कि अगर अखाड़ा परिषद या अखाड़ों का कोई भी व्यक्ति इस धर्म संसद में भाग लेगा तो सभी अखाड़े उसका बहिष्कार कर देंगे। विहिप राम जन्म भूमि के नाम पर राजनीति कर रही है। और उसे सिर्फ पैसे एकत्र करने में रूचि है। श्री दास ने कहा कि राम जन्म भूमि पर अखिल भारतीय पंच रामानन्दीय निर्मोही अखाड़ा और निर्मोही अनी अखाड़ा का हक है और इस मामले में सभी अखाड़े एवं अखाड़ा परिषद इन दोनों अखाड़ों के साथ है।

मंदिर बनाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि न्यायालय के फैसले के बाद ही वहां मंदिर बनाया जाएगा। अखाड़ा परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता रामानन्दपुरी ने कहा कि जब विहिप रामजन्म भूमि के मुकदमें में पार्टी ही नही है तो उससे उसका क्या लेना देना और अधिकार कैसा? उन्होंने बताया कि विहिप ने इस मुकदमे में पार्टी बनने के लिए उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की थी जो १६ मार्च १९९६ को खारिज हो गयी।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

यहूदी राज्य इस्राईल को कभी स्वीकार नहीं किया जायेगा।

फिलिस्तीनी प्रधानमंत्री इस्माईल हानिया ने स्पष्ट किया। उन्होंने लिबनान के छापामार हिजबुल्लाह गुरूप से संबंधित अलमनार टेलिविजन चैनल को इंटरव्यू देते हुए कहा हम्मास इसराईली आबादी को कभी तस्लीम नहीं कर सकता। हम्मास ने पार्लियामेंट के चुनाव में जबरदस्त सफलता के साथ फिलिस्तीन में सत्ता संभाली। अमेरिका और उसके सहयोगियों ने हम्मास के नेतृत्व वाली हुकूमत पर पाबन्दी लगाई ताकि व इजराईल के वजूद को तस्लीम करे परन्तु हम्मास ने हमेशा इससे इंकार किया। मिस्टर हानिया ने कहा है कि हमास और फतह गुरूप शीघ्र संयुक्त शासन काईम कर लेगा। मिस्टर महमूद अब्बास ने इसराईल के साथ शांति वार्ता पर जोर दिया है। इसराईल और फिलिस्तीन के बीच २००१ में शांति वार्ता विफल हो गई थी। मिस्टर इसमाईल हानिया ने इंटर व्यू में कहा है कि इसराईली जेलों में फिलिस्तीनी बन्दियों को छोड़ने के लिसलिसे में जंगजूओं के द्वारा गाजा में अगवा किये गए इसराईली फौजी को रिहा करने में प्रगति हुई है। उन्होंने कहा 'वह लोग संख्या के बारे में बातचीत करने से इंकार करते थे और अब वहां (इसराईल) के प्रधान मंत्री यहूद अलबर्ट ने कहा है कि वह इसराईली जेलों से फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा करना चाहता है।

मिस्टर हानिया ने पहली बार प्रमाणित किया कि जंगजू गुरूप फतह के लीफर मारून अलबर्ट गौसी समेत दूसरे लीडरों को इसराईली जेलों से रिहा करना चाहते हैं। इसराईल की एक अदालत ने सन् २००० में बरगौसी को कैद की सज़ा सुनाई है। बरगौसी ने इलजाम से इंकार किया। इस के पहले इसराईल ने यह कह कर फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा करने से इंकार किया कि इनके हाथ खून से रंगे हुए हैं। फिलिस्तीनी हथियार बन्द गुरूपों ने मांग की है कि इसराईल अपने अगवा किये हुए कैदी के बदले १०० से अधिक फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा करे। मिस्र के राष्ट्रपति हुसने मुबारक ने पिछले दिनों एक चोटी कानफ्रेंस में कहा कि वह इन दोनों देशों के कैदियों की रिहाई में समझौता कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निबाह सकते हैं।

दुन्या में इस्लामी आतंकवाद नामक कोई आन्दोलन नहीं रूसी मंत्री का नई दिल्ली में एलान –

यहां जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में रूस के रेल मंत्री याखुनिन ने बहुत स्पष्ट तौर से कहा कि दुन्या में इस्लामी आतंकवाद नाम का कोई आन्दोलन नहीं है। उन्होंने कहा कि यह कहना बिल्कुल निरर्थक है कि कहीं इस्लामी आतंकवाद पाया जाता है। उन्होंने कहा कि हर देश की अपनी प्रमुख सभ्यता होती है किसी को अधिकार नही कि वह उस को बुरा कहे। उन्हों ने यह भी कहा कि दुन्या में किसी को यह भी अधिकार नहीं प्राप्त है कि वह किसी देश को अपनी सभ्यता अपनाने के लिए मजबूर करे। उन्होंने कहा कि इस्लाम को आतंकवाद से जोड़ना बिलकुल गलत है। कुर्आन मजीद किसी बुराई का समर्थन नहीं करता। अतः यह कहना कि मुसलमान आतंकवादी होते हैं, दुन्या में इस्लामी आतंकवाद बढ़ रहा है बिल्कुल गलत है। इस सम्बन्ध में किसी देश पर आरोप मढ़ना ठीक नहीं है। इस अवसर पर उन्होंने भारत की प्रशंसा की कि यह एक ऐसा गुलदस्ता है जिसमें हर तरह के फूल हैं। उन्होंने भारत की सभ्यता और कलचर की भी प्रशंसनीय करार दिया।

हिन्दुओं के लिए हम दो हमारे दस का नारा

इलाहाबाद विश्व हिन्दू परिषद की बारहवीं धर्म संसद में केवल हिन्दू एकता की ही बात ही नहीं उठी, बल्कि हिन्दू जनसंख्या वृद्धि का मुद्दा भी छाया रहा। कमोबेश सभी संतों ने अधिवेशन में हम दो हमारे दो नहीं, बल्कि हम दो हमारे दस का नारा दिया। संतों ने वेद वाक्यों को पढ़कर सुनाया भी जिसमें दस संतान पैदा करने को कहा गया था। इसके अलावा यह तर्क भी दिया कि जनसंख्या बढ़ने से गरीबी नहीं बढ़ती।

(शेष पृष्ठ ३६ पर)